छन्द मनहरन । जासुपाद पद्मधोइ जन्म जन्म पापखोइ धा-
रिशीश आस्यहोत बिदित जगतमें। जौन त्रयलोकहूँ उबारतहै
कालहू सो दारत सकलदुख फन्दन लगतमें॥ जासु नाम जपत
कपत यमराज भट चपत उलूकजिमि द्युमणि उगतमें। जिया-
लाल सोईराम दायक सकल काम रहतशरण किन सोवतजगत
में ८ यमन किरात भील शबरी पिशाचकपि गणिकाकबन्धगी-
धतारोदीन हेरो है । दारिद सुदामाछीनो गोपिन सनाथकी-
न्हो गज प्रहलाद बीच सुयश घनेरोहै॥ पाण्डु पुत्रराखिलीन
बिप्र सुत आनिदीन बूड़त सोराखिलीन गोपनको खेरोहै। ऐसे
समरत्थ नरनाथनके नाथ नाथ जियालालनावै माथ केतो पाप
मेरोहै ९ भजन। रघुवर पाद कमल बिनजाने। पाइ सुगंधमृ-
गासीन्नीजिमि ढूंढ़त फिरत अनत कहुँभाने॥ लखि मरीचि मृग
तृषाबियाकुलधावत बुद्धि जलाशयआने । भटकत फिरत मोह
बशइत उत तियसुत स्वजन मध्य सुखसाने। मृगबाटिका भ्रमर
पुष्पन लखि जियालाल बृक ब्याध न काने १० रघुबरनेह पास
जनितोरिय। निजजन जानि कृपाप्रभु कीजिय ममहन मीन
पाथपद जोरिय॥ काम क्रोध मदलोभ मोहमद मत्सरमान पास
दृढ़छोरिय। महा बिषयबन भ्रमत चित्त नित निज अरबिन्दच-
रण मुखमोरिय। करि अतिकृपा पतित बहुतारे जियालाल तारि-
यकरिथोरिय ११ आश्रय दुःख सहेहौकबलौं। ममगुण लखिनि-
स्तारनकबहूँ बीतहिइन्द्र चतुर्द्दश जबलौं॥ जेती पुत्रसृष्टि तबसि-
य पति तामहँहौं कुपूतश्रधि सबलौं। मानुपदेह भजनहित भाषत
सोनहिं कीन्हमोहबश अबलौं। जबलगि कृपाकरहु नहिं रघुप-
ति जियालाल सुखपाव न तबलौं १२ छन्दमनहरन। जहँ जहँ
लखत रखतचित मोरिमोरि बखत बिताइये नसारकछूपाइये। दीन
बन्धुदीनानाथ सुखद अनाथ नाथ प्रगटै सुदास साथ बेदगाथ
गाइये।औरसोंनकाम जेतेजीवेहैं जहानराम ममउरधाम निजफे-
रियेदुहाइये। बीतिहैं सकलदिन एही भाँतिकैधौंनाथ जियालाल

हैदयाल कृपादृष्टि लाइये१३ चौ० । जबपरिपकहोइवैरागा। तब हिं शांतिपावे बड़भागा॥बिनाशांति भगवतहिनपावै । सबकेपरे शांति श्रुति गावे १४ है वैरागकेर यहरूपा। ताजि असार गह सार अनूपा॥ सब संसार स्वर्ग सुख जोई । लघुलख ब्रह्मलोक लगसोई १५ सत रज तम मायागुणत्यागे। पूर्णब्रह्मभगवत मन लागै ॥ मत्तकरी सम यहमन जोई । ज्ञानांकुशरोकैलै सोई १६ सबसुख स्वाद तजैनर जबहीं। प्राप्तहोत भगवत उर तबहीं ॥ सुख दुख सो पूरण मनजबलौं । भगवत प्राप्त होत नहिं तबलौं १७ पूरितबस्तु पात्र जिमि होई । दोसरिबिस्तुधरै किमि कोई ॥ ताते चहजो मनहरि लावन । आशा अपर तजै मनभावन १८ पूरण शांति तबहिं उरआवै ।देह दशा चणमाहँ नशावै॥ जिमि निर्वात दीपछबि राजै । दमित करी कानन नहिंभाजै १६ गतउर्मी बारिधि छबि जैसे । लखत चकोर चन्द्रकहँ तैसे ॥ अर्द्धनिशा सोवत जिमि प्रानी । बिगतप्रबाह लखिय जिमि पानी २० सदा अचल गति छोणी जैसे । मैथुनकाल पुरुषमन वैसे॥ पनिहारी मनघट जिमि होई । नटिनी बांस चढ़ गति जोई २१ गायक पुरुष बजावत जोई । शूर समर क्रोधित जिमि होई ॥ तिमि सूरति ईश्वरमेंलावै । पाइ शांति पूरणसुख पावै २२ रहशीतोष्ण ज्ञान नहिं देहा। जानत क्रोध न गुनत सनेहा॥ बर्षाबात क्षुधा नहिं ज्ञाना। तृप्त अतृप्त मान अपमाना २३ या निष्ठाजे भक्त कहाये। बरणौं तिनके नाम सुहाये॥ प्रथमहिं रंतिदेवकी गाथा। कहौं नाइ रघुपति पदमाथा २४ रंतिदेवहरिभक्त सुजाना। विप्रन दीन खवाइ खजाना॥ मंत्रिन सौंपि राज्य सह अंगा। कानन गये दारसुत संगा २५ लागे सुमिरण करन मुरारी। तनमन धन तिन ऊपरवारी ॥ अन्नादिकअटबीजोपावैं। ताहि भांतिं भिक्षुकन खवावैं २६ अट्ठाईस दिवस इक बारा। बीते अन्न अग्र कलुधारा॥ प्रथमहिं भगवत भोगलगाई। तीनिभाग सुततिय निजलाई २७ ताही समय विप्रइक

आयो। भाग आपनो दै सुख पायो ॥ ब्राह्मण गये शूद्रतहँ आ-
वा। क्षुधावंत मैं बचन सुनावा २८ सुत कर भाग देत नृपभयऊ।
शूद्रगमन भोजनकरि कयऊ॥ आयो एक म्लेच्छ तिहिकाला।
दीन्हो दाराभाग नृपाला. २९ भोजन हीनरहेजन तीनो। धारि
चित्त भगवतमें दीनो॥ भगवत देखतभे यह हाला। सहित
बिराग दयाल नृपाला ३० तिन समीप प्रगटे निजरूपा। कोटि
काम छबि रूप अनूपा॥ कीन्ही दया नृपतिपर भारी। कह मां-
गहु बरजो मनधारी ३१ हाथजोरि कह नृपति प्रबीना। नहिं
चाहत बरभक्ति बिहीना॥ ताते हमहिं भक्ति निज दीजै।
दोसरि कृपा नाथ यह कीजै ३२ नाना दुखन दुखित संसारा।
सो दीजै मेरेशिरभारा। मेरीपुंग्य कछू जोहोई। ताते सुखपावैं
जन सोई ३३ सुनि भगवत अतिशय सुख पायो। देखि दया
उपकार सुहायो॥ देतभये निजपद निर्वाना। जो योगी पा-
वत करि ध्याना ३४॥

चौ०। गाथा परशुराम सुखदाई। अब बरणौं रामहिं शिर
नाई। जिनको भक्ति प्रताप महाना॥ कीन्ह वनस्थन आपु
समाना ३५ जिमि चन्दन. तरु पवन सुहाई। करै सुगान्धित
बन समुदाई॥ अन्धकार बहुकाल घनेरा। दीपक जरतहि करै
उजेरा ३६ परम्परा मारग नहिं त्यागा। भगवत कीर्त्तन में
अनुरागा॥ माला तिलक प्रवृत्ति चलाई। पूरण सर्वैश्वर्य्य स-
दाई ३७ तुच्छ परन्तु सकल सुखजाना। पूरण ब्रह्महिये निज
आना॥ अति वैराग्य हिये परकाशा। मायामोह तिमिर सब
नाशा ३८ लेन परीक्षा साधू कोई। याविधि वचन कहतभो
सोई॥ कहँ ऐश्वर्य भक्ति हरिकाहा। तुमको कौन काम धन
चाहा ३९ परशुराम सुनि साधूबानी। ताजि घर गिरिकन्दर रह
आनी॥ तहाँ एक बनजारा आयो। परशुराम कहँ शीशनवा-
यो ४० बहुधन देतभयो सुखपाई॥ नृपसामा जाविधि सुख
दाई॥ इमिदै भेंटगयो बनजारा। वहसाधू मनमाहँ विचारा ४१

सुखखानी ५५ नाम देव हरिआगे जाई। काष्ठ बटोरत भे सुख पाई॥ रांका बांका तहँ चलिगयऊ। परिश्रम देखिलेत नहिंभयऊ ५६ खालीहाथ घूमिघर आये। यहबिचारि निजमानस लाये॥ आजु स्वर्ण मुद्रा हमदेखा। ताते काष्ठ न मिलो बिशेखा ५७ जो मुद्रावे ममघर आवत। तौ दुख हमहिं कठोर सतावत॥ हरि वहदारु भुवन पहुँचाये। हरि पठयो रांका गुनिपाये ५८ भगवत दियो जानि तिनलीन्हा। बहुरि आइ दर्शन हरि दीन्हा॥ पुनि रांका सों बोले बानी॥ ग्रहण करिय कछु आयसु मानी ५६ रांका रूप देखि सुख पाये। जासु पार बेदहू न गाये॥ हरि आयसु निज मस्तक आनी। लीन्ह प्रसाद रूप हरि जानी ६० नांम देव सों रांका बोले। कोमल सुन्दर बचन अमोले॥ ऐसे हरिकोमल अँगवारे। लै कांटन में तिनहिं सिधारे ६१ दीन्हों व्यर्थ परिश्रम इनको। यह नीको लागो किमि तुमको॥ बाल रूप में इनको ध्याना। सोई रूप धरो भगवाना ६२ रांका बांका कथा सुहाई। यह बरणी सन्तन सुखदाई॥ संत चरित्र अगाध अपारा। जियालाल पावै किमि पारा ६३॥

दो०। कथाकहौं रघुनाथकी रहेगुसाईं जौंन। भगवतभक्त महानभे पारलहै कहिकौन ६४ बासीवोडे से नगर उत्कल देशपवित्र। धन सम्पतिपूरित भवनगावत ईशचरित्र ६५ सकलअसार अनित्य गुनि पुरी जगत पतिजाइ॥ बासकरन लागे पिता दीन्हो द्रव्य पठाइ ६६ कीन्हो अंगीकारनहिं छकेनेह भगवान। महाप्रभूगुरुकीसदा सेवामेंहितमान ६७ शीतकाल आयो जबहिं शीत शरीर समान। जगन्नाथजी देखिकै कीन्हीं कृपा महान ६८ ऊर्णवस्त्र निजदेतभे शीत विभंजनकार। एक समय तिनके प्रकट होत भयो अतिसार ६९ जगन्नाथ सेवाकरी बालक रूप बनाइ। पुनिवृन्दाबन जातभे गुरुआज्ञाको पाइ ७० राधा कुण्ड समीप सो बास करत भे आइ। नित मानसि पूजन करत

भगवत पद मन लाइ ७१ दूध भात को एक दिन मानसि भोग लगाव। ध्यान मध्य परसाद सों किय भोजन युत चाव ७२ भक्तगरिष्ठ सुउदरमाधि पीड़ा अधिक जनाव। भक्तोपद्रवनाटिका देखि बैद्य बतलाव ७३ ताकी औषध कीजिये सुनि गुसाँइ कह बैन। जासों प्रगटो कष्ट यह सोई है सुख दैन ७४ सो अमृत जीवन हितै औषध मूल महान। मोहिं सुखद सब कालहू औषध गम्य तहाँन ७५ सुनत बैद्य चरणनपरो भयो हिये विश्वास। जियालाल करिहौ कबहिं या विधि निजपद दास ७६॥

चौ० श्रीधर स्वामीकी शुभगाथा। वरणौंनाइ रामपदमाथा॥ श्रीमद्भागवते सुखदाई। टीका विरचो शुभग बनाई ७७ टीका बहुविद्वज्जन कीन्हे। पक्षपात निजनिज लिखिदीन्हे॥ श्रीधर स्वामिन यहकछु कीन्हा। यथातथ्य वर्णन करिदीन्हा ७८ परमानन्द गुरुम्रति लैकै। टीकालिखो सुपूरणकैकै॥ सभाभई काशीमें तबहीं। निजनिज टीकालाये सबहीं ७९ निजनिज तिलक श्रेष्ठ बतलावैं। एकबात कोउ न ठहरावैं॥ श्रीधरस्वामि गर्व नहिंधारा। पुनिसब पण्डित कीन्ह विचारा ८० छन्दरामगीतिका॥ विन्दमाधव-सुवन में सबधरे टीका जाइ। करैं अङ्गीकार जाको सोइ देहु चलाइ॥ धरे मन्दिर मध्य में करि दीन्ह बन्द किवांर। कछुक धारि बिलम्ब बहुरो खोलियो तिन द्वार ८१ भये हस्ताक्षर सुटीका स्वामि श्रीधर माहिं। अपर बहु टीकान ऊपर भये अक्षर नाहिं॥ भयो अति विश्वास सबके तिलक प्रगटो सोइ। कीन्ह अंगीकार सब वह श्रीधरी है जोइ ८२ रहे श्रीधर स्वामि प्रथमहिं भक्त भगवत जोइ। त्यागियो घरबार जा हित चरित वर्णत सोइ॥ आगरे सों द्रव्य लीन्हे जात कतहूं तौन। मिले तस्कर मार्गही में पृष्ठ कीन्हों गौन ८३ पूंछियो को संग तेरे कहां को तू जात। कहो श्रीधर स्वामि कोशलनाथ कोमल गात। कीन्ह ठगन बिचार मिलिकै यह अकेलो जात। मारि याको द्रव्य लीजै बचन मानिय तात ८४ जबहिं मारनको चहे

तिनअस्त्रलैनिजहाथ। करनरक्षा धनुषशरकरदेखियोरघुनाथ॥ यहीविधिसों मार्गपूरण रहो उद्यमएह। कहतभे पुनिसकल तस्कर जबहिं पहुँचेगेह ८५ कौनवह सुकुमार सुन्दर नयोयौबन जौन। करत रक्षामार्ग तेरी लखतभे हमतौन॥सुनतश्रीधरस्वामि पुलकित अंगभे तिहिकाल। छाँड़िघर धनसंपदाको दीन्हतब- हीं हाल ८६ सो०। याविधि देखिचरित्र हरि सन्मुख तस्कर भये। श्रीधरकथा विचित्र जियालाल कहमति सरिस ८७॥

दो०। कामध्वज की अबकथा वरणौं सुखदमहाइ। क्षत्रीकुल मेंहोतभे चारिबंधु इकमाइ ८८ छन्द रामगीतिका। भयेभक्त अनूप भगवत करत भे बनबास। भजन सेवा करत कीर्त्तन होइ रघुपति दास॥ जात भगवत भोग के हित नगर को इक काल। लै तहां सो अन्न दिनप्रति जात बनको हाल ८६ एक दिन तिन बंधु बोले साथ हमरे जाइ। हाजिरी सरकार राना देइ जाइय भाइ॥ लियो मासिक जाइ तुम्हरो यहीं हमरो काम। दियो उत्तर सुनत या विधि रति पतिध्वज नाम ९० रहत हा- जिर जासु के हम तासुहीसों काम। गैरहाजिर होब नाहीं नहिं लिखाउब नाम॥ कह्यो बन्धुन मरौगे जब दाहकरिहै कौन। दास मैं हौं जाहिको वह करैगो सब तौन ९१ गये या बिधि भाषि कानन आश श्री भगवान। कछुक दिन महँ त्याग तनु हरि भेजियो हनुमान॥ आइ हनुमत अगर चन्दन काष्ठ सों किय दाह। चिता धूमहिं परसि तरिगे प्रेत बनकेता- हँ ९२ एकप्रेत न रहो ताक्षण आइयोगतकाल। परमपदको गे सजाती सुनतभो यहहाल॥ चिताभस्म सुलोटिकै गतिलही उत्तमतौन। जियालाल दयाल श्रीरघुनाथ सभहैकौन ९३ भक्त को कछु अगम नाहीं कहत बाणीवेद। करतही सतसंग जिन को हरतपूरणखेद॥ करत तीरथ आशजिनकी धारिमान सने- ह। आइहैं कबसंतहारक पाप हमरे गेह ९४॥

छन्द रामगीतिका। अबगदाधर दासकी बरणौं कथाशुभ

एह । भे बिहारीलाल के शृंगार धारक नेह ॥ देइ तन मन करत सेवा हरि चरित्र बखान । भे अनन्यन चित्त दोसर देव स्वप्नहु आन ९५ बैठ आइ सुबाग में बुरहानपूर कि तौन । कहतभे पुर जानके हित लोग बासी जौन ॥ गे नहीं भगवान ध्यानम चित्त है जिन लीन । एक दिन जल बहुतबरषो देख भगवत दीन ९६ एक साहूकार सों भगवान बोले बैन । भक्त मम यह दुःख पावत करहु विरचित ऐन ॥ सुनत साहूकार मन्दिर देत भो बनवाइ । बिनयसंयुत गदाधर को दीन्ह बास कराइ ९७ अपर मन्दिरहू बनाये अतिथ साधुन हेत । गदाधर भगवान मूरति थापियो सुद सेत ॥ करन सेवा साधु लागे आव खरचत तौन । एक दिन निशि काल साधू कछुक आये भौन ९८ साधु भोजन हेत कह भण्डारि बुद्धिनिकेत । कछुक है सामग्रि भगवत भोग प्रातहि हेत ॥ कह गंदाधर करहु तासों साधु सेवा काहँ । प्रात भगवत भोग के हित आइ है पुनियाहँ ९९ कियोसोलह प्रातनाहीं तीसरेलौं याम । क्षुधित चेला कहत व्याकुल कछु न आयोधाम ॥ खरच या अत्यंतसो यहभयो हमरोहाल । नाहिंजानिय कबहिंछूटब गदाधर बपुजाल १०० आइयो तिहिकाल साहूकार एकतहांइ । युग्मशतलै रजतमुद्रा देतभो सुखपाइ ॥ कह गदाधर मारिये इन असंतोषिन शीश । सुनत साहूकार भयलह करी मोसनरीश १०१ सकलतब वृत्तान्त तासोंकहतभे समुझाइ । भयो भगवत शरण सोऊ चित्त आनँदपाइ ॥ करी याविधि साधुसेवा बहुरि मथुराजाइ । ब्रजकिशोर स्वरूप छबिछकि दीन्ह आयुबिताइ १०२ ॥

छन्द रामगीतिका । कथा माधवदासकी शुभकरत वर्णनसोइ । जासु भक्तिप्रताप महिमा वरणिकह किमिकोइ ॥ शांतअरु वैराग्य वर्णन भावकरसिक कौन । व्यासको अवतारलै जनु भक्ति प्रगटी तौन १०३ शास्त्रसारमिकाल जगमें करतभे विख्यात । पारजगंत समुद्रकीन्हे कोटि जन सुखदात ॥ भये

ब्राह्मण बंशमें धनि मरी इनकी नारि। छोंड़िनिजघर देतभे संसार असत बिचारि १०४ छोंड़ि जगत बिकार सबबिधि अलग तासों होइ। पुरीजगपति जाइकै करिदरश बहुरौ सोइ॥ बैठ बारिधिकूलमें मन धारि भगवतरूप। भूखप्यास भुलाइ दीन्हीं धारि ध्यान अनूप १०५ तीनिदिन याभांति बीते कियनभोजनताहँ। कीन्ह भगवत शोच बहुबिधि कहत भे मनमाहँ॥ बनतब्यंजन बहुत हमरेहेत मधुरस भोग। हाय मेरोभक्त भूखो तीनि दिन को होग १०६ एकदाना तक न पहुँचो कहत हरि बहुबार। तुरितभेजो रमाकर परसादसोने थार॥ होइकै बेचैन भगवत भक्तवत्सल जोइ। चलीं लक्ष्मी लै सथाल प्रसाद करधरिसोइ १०७ करन बहुरि बिचार लागीं इबिधि माता कौन। होइ बालक अल्प दिनको ताहि पालन जौन॥ भक्तिकेघर जन्मलीन्हों दासमाधवबाल। लाज आज अनन्त हमको जाहि नेक न पाल १०८ पिता रहत सुचित्त बालक पालनै सति बात। नाहिं सुचित बिलोक कबहूं पुत्र पालनमात॥ जाइ लक्ष्मि सलज्ज माधव दास पीछे ठाढ़ि। नेत्र खोलन दासमाधव प्रीति ध्यानमबाढ़ि १०९ यदपिमालुम होत भोमुखचन्द्रको परकास। सुनतआभूषणनकीझंनकारहूभेखास॥ थालधरि तहँ दीन्ह लक्ष्मी बहुरि आईं गेह। देखिमाधवदास भोजन करतभे युतनेह ११० धन्यभाग सराहआपन थालको दियडार। पत्रविरचित पात्र जाबिधि देइको उपवार॥ प्रातमंदिरमें पुजारी लगेढूंढ़नथाल। जहां माधवदासबारिधिकूलआये हाल १११ पकरि माधवदास को बहुबेतमारे तौन। थाललै पश्चात पूजक भवनकीन्हों गौन॥ चोट षह भगवान निज कटिलेत भे तिन केरि। पूजकनसों कहत भे इमि बचन बोले फेरि ११२ हमहिं वह परसाद भेजो थाल लक्ष्मीहाथ। मारियो अपराधबिनहीं जासु के हम नाथ॥ लगी सोतनचोटमेरे क्रोध हमकोतौन। सुनतसभय पुजारिब्याकुल करतभे तहँ गौन११३

परेमाधवदास चरणन बिनय करि बहुबार । चमातिन अपराध कीन्हीं बिदित यह संसार ॥ कृपा अति भगवान तिनपरभक्त लहसुनिचैन । नहिंसमात शरीर आनँद सुमिरिहरिगुणऐन ११४ भयो माधवदासको अतिप्रेम भगवतरूप । लखतभगवत रूप बेसुधिहोतकबहुँ अनूप ॥ रहत मन्दिर मांझ कबहूँ लखि न पूजकपाव । एक दिन तहँ दासमाधव शीतश्रमित सताव ११५ कह्यो भगवतपूजकनसों शीत हमको लागि । देतभे पूजार सुन्दर बसनआनँद पागि ॥ बस्त्रआपन दीन्ह माधवदासको भगवान । आपु बस्त्रनवीन धारो जासुमोलमहान ११६ एक बेला प्रगट तिनके अतीसार महान । परेबारिधिकूलजातन बिकल जी अकुलान ॥ शौचकरनसमर्थ जबनहिं रही तिनकी देह । आइ शौचकराव भगवत मनुजबपु अति नेह ११७ कीन्ह चित्त बिचार माधव दास यह है कौन । करतहै बहुभांतिसेवा इबिधि मेरीजौन ॥ कीन्हध्यान बिचार जबहीं जानियो भगवान जोरिकर कह असपरिश्रम उचित नाहीं जान ११८ कहोसुनि भगवान मोसन रहोनाहीं जात । आपहींमैं चलो आवत दुःख लखिजनगात ॥ कह्यो माधवदास करिये दूर रोगहि क्योंन । देत हमको कष्ट आपहु पावतेलखि जौन ११९ भोगयह प्रारब्धकोहै रोगउतपति जोइ । दूरकरनो उचित नाहीं भोगनोहै सोइ ॥ कर्म भोग बिरुद्धपद्धति परत हैं जियजान । भोगईममभक्तसुख सोध्वंशिये किमिमान १२० रोगहूकरि दूरि दीन्हों भाषिइमि भगवान । बात यह बिख्यात जगमें होतभई निदान ॥ तब सहस्रनमनुज तहँवांजान आवनलाग । लाग माधवदासमांगन भीखयुत अनुराग १२१ भीर दूरीकरण प्रगटन सिद्धताकेहेत । मन्दिरन प्रति भीखमांगत गये एकनिकेत । देत चौकारहीरमणी शब्द सुनिकरिक्रोध । पोतनाशिर दासमाधव मारियो गतक्रोध १२२ दयायुत तब दासमाधव धोइपोतनकाहँ । वर्त्तिका करि बारियो जगनाथ मन्दिरमाहँ ॥ भवनदारा हृदय प्रगट

समानभो परकाश। भक्ति प्रगटी तासुहीमें चन्द्र जिमिआकाश
१२३ गयेदूजे दिवस माधवदास ताकेद्वार। परी चरणन आइ
तिनके बन्दिबारहिंबार॥ एकअतिविद्वान पण्डित फिरत जीतत
देश। लिये बहुजयपत्रकिय जगनाथपुरि परवेश १२४ सुनत
भोपाण्डित्य माधवदासजी की सोइ। कहो चर्चाकरहु हमसों
शास्त्रकीहै जोइ॥ कियोचर्चानाहिं माधवदास यहलिखिदीन।
हारमाधवदास पण्डित जीतियो जयकीन १२५ गयोकाशीमाहँ
पण्डित कह्योसबसोंजाइ।मांगियो वहपत्र विदुषनदेतभोहरषाइ॥
लिखोतामहँ हारपण्डित जीतमाधवदास। सुनत पुरुषोत्तम
पुरीको जातभो गुनिहास १२६ कहतभो दुर्बचन माधवदासको
बहुसोइ। करन बहुउतपात पण्डित लाग क्रोधित जोइ॥ कहो
माधवदास कहिये देइँ लिखिसोफेरि। धूर्त्तहै तूकहत पण्डित बार
बारहिंहेरि १२७ अबहिंतोहिं चढ़ाइगर्दभ देउँ नगरघुमाइ। कहो
माधवदास कछुनहिं रहे सुनतचुपाइ॥ जातभो अस्मान यह
कहिजबहिं पण्डितसोइ। मिलतभे भगवान आगेतबहिं पण्डित
होइ १२८ जीति लीन्हों बादकरिकै मार्ग पण्डितयत्र। बहुरि
ताहि चढ़ाव गर्दभ बालकन सहतत्र॥ बहुरि नगर घुमाव बहु
बिधि छारझोंकतबाल। दैवबशगे दासमाधव लखतभे यहहाल
१२९ कीन्ह भगवत बिनय बहुविधि दया हियमेंयस्य। अतिहि
यह विद्वान भंजन मान उचित न अस्य॥ कहोहरिहै उचित
एहीमूर्खके हितमाहँ। भक्तमोर चढ़ाइगर्दभ ममचढ़ावत याहँ
१३० सुनतगर्दभ सोउतारो दासमाधवताहि। क्षमानिज अप-
राध बहुरिकराइयो चितचाहि॥ एकदिवस बिचार माधवदास
कीन्होंएह। गानब्रजके चरित बहुइतहोतहैंश्रुतनेह १३१ तासु
दर्शन करिय यहकहि चलतभे सुखपाइ। अशनहित इकमार्ग
बाईगईभवनलवाइ॥ जबहिं भोगलगाव जगपति आइयो तिहि
काल। उमर लघुसुकुमार बाई देखियो वहबाल १३२ पूँछियो
यह कस्य बालक लाइयो निजसाथ। जीवहीं पितुमातु कोबिधि

पुत्रहीन अनाथ॥ ग्रीवफेरि बिलोकि माधवदास लखभगवान। कृपा लखि भगवान की भे प्रेममग्न अमान १३३ चले अग्र बहोरि माधवदास तिहि समुझाय। एक साहूकार मन्दिर माहँ पहुँचे जाइ॥ कहो जासों प्रथमहीं हम आइहैं तवभौन। मिली ताकी तीयपदगहि साह किय कहुँ गौन १३४ करतरहे महन्तएकरसोइ मन्दिर माहँ। कहो नारी अशनकरिहैं येउ साधू याहँ॥ सुनतक्रोधित कहमहन्त न गुजरहोवे अत्र। कहो माधवदाससों करजोरि नारी तत्र १३५ लेहुसामग्री बनाइय स्वकरही परसाद। देहु भोजनयोग्य कछुकरि लेहिंयुत अहलाद॥ उष्ण पय तिय लाव माधवदास पायो सोइ। चलतभे आनन्द संयुत बिदातासों होय१३६ आवसाहूकार ताक्षण सुनत भो यह हाल।गयो मारग माहँ पायो गहे चरण बिहाल॥ कीन्ह बिनती जान मन्दिर कहो माधवदास। धन्य तुम्हरी नारि दिनदिन होइ भक्ति प्रकास १३७ गयो साथ महन्त सोऊ कीन्ह बिनय महान। क्षमाप्रभु अपराध कीजै आपको नहिंजान॥ कहो माधवदास जाइय हरिद्वारहि आप। भक्त शीतप्रसादि पाइय जासु अति परताप १३८ बिदामांगि महन्त साहूकारहू किय गौन। देखि वृन्दाबिपिन आनँद पाइयो कह कौन॥ भवनगे बांकेबिहारी चणक पायो ताहँ। लिये आनँद सहित आये कूलयमुनाजाहँ १३९ कहो यद्यपि द्वारपालन भोगलागनचाह। गुनो माधव दास होवै तृप्तियेहीमाह॥ बने व्यंजन छरसलै करथार गे पूजार।लगो तहँवाँ भोग नाहीं गीमिहरिऊचारि १४० चणक भोगलगाव माधवदास भूखन तासु। सुनत इमि पूजार धाये गये तिन ढिग आसु॥ बिनय संयुत तिनहिं लाये भोग लागो तत्र। बहुरि बनभाण्डीर आये खेम साधू यत्र १४१ तासु मन्दिर टिकन चाहे टिकन दीन्हों नाहिं। बैठ अलगहि परतभे कृमि तासु भोजन माहिं॥ तबहिं साधूशरण आयो दास माधव जाहँ। क्षमा तिन अपराध कीन्हीं दया करि

मनमाहँ १४२ आवपुनि हरिआन ग्राममरहत साधू यत्र। कथा भगवत होत दिनप्रति सुनतभे रहितत्र ॥ धेनुबहुतै तौन मन्दिर करत कारज एह। सकल गोमयकरिइकट्ठा उपलपाथ सनेह १४३ एक दिन इकसाधु आयो कियप्रणामहिं जानि। देखि भवन महन्त माधव दास को पहिचानि ॥ परे चरणन आइ बिनती करतभे बहुसोइ। रहे माधवदास कछुदिन तहां आँनद होय १४४ स्थान को बरदानदैके साधु सेवा हेत। चलतबेला जातभे जहँ जन्म भूमि निकेत ॥ मातु सुत तिय भक्ति दैकै जातभे पुनि तत्र। पुरी पुरुषोत्तम विराजत जगत के पति यत्र १४५ भजन सुमिरन ध्यान आदिक करन लागे तौन। चरित माधव दास बहुविधि पारपावै कौन ॥ जियालाल बखानकीन्हों जानि पायो जौन। साधुचरित अगाध धारत बानिवेदहु मौन १४६ ॥

नारायणदासकी कथा ॥

दो०। अल्हभक्तके बंशमें भेनारायणदास। चारन जाति कहावई भक्ति विरागप्रकास १४७ भ्राताबड़ो कमातहो खर्च करत येतौन। भोजन हितगे एकदिन परसत भाभीजौन १४८ शीत अशन कीन्होंनहीं माँगो उष्णतहांइ। सोकह क्यातुम अल्हसम जोसेवैं चितलाइ १४९ लगीबात तिनके हिये मनमें कियो बिचार। भगवतभक्ति बिहीनतनु पशुसमान संसार १५० जीवनभस्म समानहै कीन्ह जगत गुनित्याग। जाइ द्वारकाके विषे हरिसुमिरत बड़भाग १५१ कियो भक्तिसो हरिहिबशदीन्ह दरश भगवान। कृपाकरी तिनपर अमित मानो अल्ह समान १५२ ॥

जीवगोसाईंकी कथा ॥

चौ०। जीवगुसाईं भक्तसयाने। जगत असत्य सत्य हरि जाने ॥ बास करत वृन्दाबन सोई। दिनप्रति नईप्रीति उरहोई १५३ एकसमय तिनयश सुनिपायो। अकबर बादशाह बुल-

वायो ॥ तिनसों कहतभयो सुखपाई। कहिय यमुन माहात्म्य सुनाई १५४ वर्णन कीन्ह बिबिध बिधि ताही। बृन्दावन आये पुनिचाही ॥ एकसमय बृन्दावन आये। अकबर बादशाहसुख पाये १५५ तिनसों मिलि आनन्दित भयऊ। बाणी कहन मलिक इमिलयऊ ॥ मांगिय कछु मोसन जो भावै। कहगुसाइँ मन एकन आवै १५६ बादशाह बहुतैहठ कीन्हा। तब याबिधि इन मांगन लीन्हा ॥ शास्त्र पुराण स्मृतिहैंजेते। बृन्दावन मँगवाइय तेते १५७ बादशाह जन तुरित पठायो। खोजि खोजि लघु दिनन मँगायो ॥ पुनि मन्दिरहित बिनती कीन्हा। सुनि गुसाइँ इमि उत्तर दीन्हा १५८ नेत्रमूंदि देखिय सो देखा। बृन्दाबन की भूमि बिशेखा ॥ मणिमय मन्दिर कोटिन सोहत। सुबरण खचित मुनिन मन मोहत १५९ खोलि नयन मन बिस्मय पायो। बादशाह अति विनय सुनायो ॥ बिदामांगिनिज भवन सिधारा। इमि गुसाइँ कर चरित उदारा १६० ॥

सुरसुरीजीकी कथा ॥

चौ० परमसतीसुरसुरि सुकुमारी। जोसुरसुरानन्दकीनारी ॥ पति समेत बृन्दाबन जाई। भगवत भजन ध्यानमन लाई ॥ १६१ रहो रूप सुन्दर जिनकेरा। कुटी समीप यमन कियडेरा ॥ तिनसरदार देखि तहँपायो। रूपदेखि सुधि बुधि बिसरायो १६२ निज दासन सों कहो बुझाई। लावहु पकरि नारि यहजाई ॥ जबजानो सुरसुरियह हाला। भगवत ध्यानधरो तत्काला १६३ ब्याघ्ररूप प्रगटे भगवाना। सबदुष्टन को कियो निदाना ॥ जासोंनेक न लागैबारा। यह बिचारि हरि तनु हरिधारा १६४ लीन्हों लाज राखि भगवाना। जियालाल हरि समको आना ॥ आवत तुरित भक्तदुख देखी। शरणागतपर कृपाबिशेखी १६५ ॥

द्वारकादासजीकी कथा ॥

छन्दरोला। रहे द्वारकादास कील्हचेला सुखदाई। परम

भक्त भगवान राम छबि हिये बसाई। ध्यान करत जल मांझ रामचरणन शिरनाई ॥ भवबन्धन सब काटि रहे दृढ़ चितहरि लाई १६६ ॥

राघवदासजीकी कथा ॥

चौ०। राघवदास भक्त अति नीके। विषय भोग जाने सब फीके॥ काम क्रोध अरु लोभ अपारा। जानो जीति बृथा संसारा १६७ भगवत भक्तन में विश्वासा। प्रिय दर्शन सहिष्णुहारिआसा ॥ सेवासाधु गुरु अतिकरहीं। मीठेबचन भाषिमुद भरहीं १६८ ॥

हरिवंशजीकी कथा ॥

छन्दरामगीतिका। भक्त हरि हरिबंश नीके चरणं हरि विश्वास। बस्तुसब करिदान दीन्ही त्याग कीन्हीआस॥ घटी एकहुजात व्यर्थ न भजन बिन भगवान। बचनं कबहुँ कठोर बोलन सहन शील निधान १६९ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येषोड़शशांतबिरागनिष्ठायांचतुर्दशभक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधावष्टदशस्तरंगः १८ ॥

दो०। हरिसेवा माहात्म्ययह सत्तरहीं शुभनिष्ठ। दश भक्तन की गाथजहँ वर्णन अहै वरिष्ठ १ ऊर्ध्वरेखको बन्दऊँ राम कमल पदजौन। करिप्रणाम अवतारबुध धरोगया में जौन २ सेवादास्य कहावई स्वामीकी है जौन। अनुक्षण सन्मुखही रहै आलसकरै न तौन ३ मनसा बाचा कर्मणा जानै निजकोदास। जिमि प्रसन्न स्वामीरहै भगवत रमा बिलास ४ निजदुखको सुभै नहीं प्रभुकारज हित लागि। तन धन कुल परिवार सुत अरपै मनअनुरागि ५ चौ०। महिमां सेवा निष्ठाजोई। काविधि बरणि सकै कविकोई॥ सकल सुरासुर नरगंधर्वा। किन्नर यक्ष

पितर गणसर्वा ६ या निष्ठासों हरिको पावत । स्वर्ग मोक्षनाना सुखयावत ॥ बर्णन करों कछुक मैं सोई । या निष्ठामें तत्पर जोई ७॥

लक्ष्मीजीकी कथा॥

चौ० । जगत जननि लक्ष्मी गुणखानी । श्रीनारायणकी पटरानी ॥ हरिसेवा तनमनदैकरई । आज्ञासदाशीशपर धरई ८ हरिलक्ष्मी बपु एकबखाना । शब्द अर्थ जलबीचि समाना ॥ जेते विष्णुचरित्र सुहाये । तेते लक्ष्मीके सुखछाये ९ सीता राधा रुक्मिणि जोई । शक्ती सकल रमाकी सोई ॥ जेतेहैं इनआदिचरित्रा । जानिय लक्ष्मी केर पवित्रा १०॥

शेषजीकी कथा॥

चौ० । शेषअनन्तचरित्रअनन्ता । वर्णनकरत बेदबुधसन्ता ॥ रक्षा धर्म करंत सब काला । दुष्ट विनाश संत प्रतिपाला ११ भगवत भजन करत उपदेशा । वेद श्रुति उपदेश विशेशा ॥ पिंगलादि प्रगटे सुखपाई । छन्द प्रबन्ध प्रगटभे आई १२ धर्म हेत धारतअवतारा । दुष्ट बिनाशन जग सुख कारा ॥ भगवत रूप शेष सुखदाई । वेद चरित्र कहत सकुचाई १३ भगवत नये नाम नित गावत । द्वैसहस्र रसनासुख पावत ॥ भगवत सिंहासन शिर सोहत । रूप देखि रतिपति मन मोहत १४ करसों हरिपरिचर्य्या करहीं । नयनन रूप देखि मुद भरहीं ॥ हरिप्रसाद रसना सों चाखत । तुलसि गंध नासा अभिलाखत १५ कहिनसकत महिमा जिनकेरी । वेदपुराण शास्त्र मुदढेरी ॥ जियालालसो किहिविधिगावै । पर्वत पारपंगु किमिजावै १६॥

षोड़शद्वारपालपार्षदोंकी कथा॥

चौ० । षोड़शद्वारपाल हरिजोई । वर्णनकरौंनामतिनसोई ॥ बिष्वक्सेन सुसेन सुहाये । बलजय बिजय प्रबल सुखछाये १७ भद्रसुभद्र नन्द अरु चण्डा । कुमुद सुनन्द सुशील प्रचण्डा ॥

शील अपर कुमुदाक्ष कहावत। भगवत रूप देखि सुख पावत १८ हैं असंख्य पार्षदहरि आना। तिनहिं कौन करिसकत बखाना॥ षोड़शपार्षदये सुखधामा। हरिसेवातजि और न कामा १९ छन्दरामगीतिका। प्रीति संयुत सेव भगवत समय व्यर्थ न जात। सहितआनँद निरख भगवत रूप कोमलगात॥ रहत भगवत प्रेमरसमें मग्नअलग न होत। पुष्ट हृष्टबलिष्ठ सब बिधि अङ्ग तेज उदोत २० चहैं तो ब्रह्माण्ड कोटिन करैं बिरचित तौन। करैं पालन सकल भांतिन बिष्णु के सम जौन॥ करैं नाश बहोरि जग को सत्य है यह बात। बिष्णु के समबिष्णुके जन सदा सुकृतगात २१॥

हनुमान्‌जीकी कथा॥

चौ०। श्री मारुतसुत कथा सुहाई। बरणौं रामचरण शिरनाई॥ अंजनिपुत्र महाबलवाना। रामचन्द के भक्त सुजाना २२ रघुबर कथा पोत जग सरिता। बादवान सम हनुमत चरिता॥ हनुमत कथा कही किमि जाई। धन्य धन्य कहलोग लुगाई २३ सीतहि जाइ सँदेश सुनायो। पुनि मधुबन भीतर फल खायो॥ अच्छ सँहारि लंक कहँ जारी। लूमबुझायो वारिधि वारी २४ चूड़ामणि लै प्रभुपहँ आये। रघुबरचरण शीश तिन नाये॥ रघुनन्दन लीन्हो उरलाई। सीताकेरि पूछि कुशलाई २५ लछमण हित संजीवनि लाये। भरतहि रामागमन सुनाये॥ सब शास्त्रनके ज्ञानन वारे। श्री रघुनन्दन के अति प्यारे २६ उर बिश्वास नाम प्रभु भारी। सोका विधिमैं कहौं विचारी॥ जब रावणहिं रामसंहारी। अवधपुरी आये सुखभारी २७ सिंहासन रघुनाथ बिराजे। छबिदेखत सुरनायक लाजे॥ भेंटदेन सबभूपति लागे। देश देश के आनँदपागे २८ तबहिं बिभीषण आनँदपाई। मणिमाला दीन्ही छबिछाई॥ जोबारिधिसों लाये मांगी। ताहि देखि सबकी मति

लागी २६ तब रघुबर सबकी गतिजानी। माला एकचहतसत्र
प्रानी॥ ताते मालदेउँ यहताही। इहि चाहनाजासु हियनाही
३० यह बिचारि हनुमंत बुलाई। मालादेतभये सुखपाई॥ हनू-
मान माला वहदेखी। जामें प्रगटन भक्ति बिशेखी ३१ रामना-
म ऊपरनहिंदेखा। तबभंजी मणि एकबिशेखा॥ ताअंतरहु नाम
नहिं पायो। तबहिं द्वितिय मणि फोरनलायो ३२ सुरनर कहत
भये इमिबानी। रामकाहिदिय यहसुखदानी॥ जगतमांझ अस
मालन देखा। ताको तोरत जात बिशेखा ३३ या विधि कहत
मनहिं मनसबहीं। रहोनगयो एकसोतबहीं॥ भंजत किमिदुर्ल-
भमणि माला। मोसन सत्यकहियसो हाला ३४ कहकपिराम
नाम अवलोकत। सोकहकपि मुखओर बिलोकत॥ राम नाम
इन बस्तुन माहीं। होतकतहुँ गुनियेमनमाहीं ३५ कह हनुमान
नाम जोनाहीं। तौ यहँ मालामणिन वृथाहीं॥ सो कहजो
याबिधि बिश्वासा। चाहिय तब तननाम निवासा ३६ चाहिय
सत्य कहा हनुमाना। यह कहि निजवक्षसित्वक भाना॥ राम
नाम रोमाप्रतिदेखा। वहजन लज्जितभयो बिशेखा ३७ भोबि-
श्वास सबन मनसोई। नहिं सेवक हनुमत समकोई॥ ऐसेकोटि-
न चरितअपारा। जियालालपावैकिमिपारा ३८॥

जगतसिंह की कथा॥

दो०। बेटा आनँदसिंह के जगतसिंह महिपाल। भगवत
भक्तिहि धारिहिय कियो साधुप्रतिपाल ३९ सत्य प्रेमसों करतभे
भगवतसेवा माहिं। भयोनमनडग मगकबहिं भक्तिघटी उरनाहिं
४० चौ०। भक्ति सौंहँ सब प्रजालगाये। सोहत धनसंपति सुख
पाये॥ दिनदिन उदयराज्यकरहोई। प्रजानन्द पावत सबकोई
४१ याबिधि सेवा में मनदीन्हा। लक्ष्मीनारायण बशकीन्हा॥
जात नृपति पुर बाहर जबहीं। हरिफलकी अग्रचलतबहीं ४२
किंकर सदृश जात तहँराजा। चढ़त शत्रुपर जबजयकाजा॥

मालिक तहाँ होत भगवाना॥ आपुकरत दलकारज आना ४३ हरिसेवा करकारज जेता। निजकर करतनृपति सबतेता ॥ निज शिर जलभगवत हितलावत। हरि सुमिरण रसना सुखपावत ४४ सबराजन के राजकह्याये। शाहजहाँनाबाद सुहाये ॥ जल लावनके अवसरमाहीं। देखनचहये नृपतिनकाहीं ४५ नृपयश-वंत सिंह सुखछाये। उदयपूर के भूपकहाये ॥ जयपुरके जय-सिंहनृपाला। नृपकी भक्तिकेर सुनिहाला४६ शेषनिशाद्वेघटिका देखी। जात भये तिहि मार्ग विशेखी॥ दर्शन होतभये तिनका-हीं। सायुध बहु पैदलसँगमाहीं ४७ सेवक साथचले बहु आवत। कुलसेवक बहुआनँद पावत॥ राजाशीशस्वर्ण घटलीन्हे। रसना रामाचिह्न जन कीन्हे ४८ नाँगे पगन नृपहिं लखि पावा। दोनों नृपन न धीरज आवा॥ किय दण्डवत नृपति के चरणा। हाथ जोरि बिनती बहु बरणा। ४९ जीवन को सुखजौन बखा-ना। सो तुमहीं को दिय भगवाना॥ इत हरिभक्ति राज्य सुख कारण। उत हरिलोक मिलै दुख दारण ५० जगतसिंह सुनि कहो सनेहा। मैं करि संकत सेवका एहा॥ है अवश्य इमि ब-हिन तुम्हारी। जाकी संगति है अति प्यारी· ५१ नृप जयसिंह सुनी यह बाता। दीप कुंवरि तन हरिसों नाता॥ अति आन-न्द लहो नरनाथा। जगतसिंह की याबिधि गाथा ५२॥

कुंवरकिशोरकी कथा॥

छन्दनरेन्द्र। नृप खेमाल पौत्रहरि सेवक कुंवरकिशोर कहा-यो। भगवत भक्ति बिराजत जाउर प्रेम चरण प्रगटायो॥ की-न्ह स्वभाव विवश सब काहुन मधुर बचन कह सोई। शिक्षा मानि पितामह निज की कीन्ह भली बिधि जोई ५३ ताको यह बृत्तान्त कहत जब मरन लाग खेमाला। शोच युक्त भो नयन नीर भरि पूंछत भे तब बाला॥ राज समाज कोश परि-पूरण करिय चहिय जो दाना। कारण कौन शोच जिय लावत

सुनि खेमाल बखाना ५४ कीन्हों सकल दान धर्मादिक केवल कियो न एहा । हरि हित जल शिर धरि नहिं लाये नृत्याग्रन युत नेहा ॥ कुंवर किशोर जोरि कर बिनयो आज्ञा मो कहँ दीजै । जबलगि जीवरहै तन जनको आयसु शिरधरि कीजै ५५ सुनि खेमाल लाइ उर हर्षित द्वौ हित आयसु दीन्हा । तनतजि परम धाम मग लीन्हा इन आयसु शिर लीन्हा ॥ आयसु कियो निबाह जौन बिधि बरणि कौन सो जावै । भगवत पद लगाव इन्द्रीगण तन मन धन सति भावै ५६ ॥

नरहरिआनन्दकी कथा ॥

दो० । भे नरहरि आनन्द जी भगवत भक्त सुजान । भगवत सेवा में रहत राति दिवस सुखदान ५७ अति बर्षा इक दिन भई काष्ठ रसोई हेत । मिलो नहीं ताहित गये दुर्गा तत्र निकेत ५८ छत्ति बिदारण लाग जब दुर्गा बोली बैन । नहिं मन्दिर खोदिय मिलिहि काष्ठ नित्य तव ऐन ५९ फिरि मन्दिर आये लखो काष्ठ रसोई कीन्ह । भगवत भोग लगाइ पुनि सेवा में मन दीन्ह ६० एक नारि जानो चरित कहतभई पति पाहिं । खोदौ दुर्गा भुवन नित मिली काष्ठ तुम काहिं ६१ सो मन्दिर खोदन लगो देवी टांगो ताहि । शिर नीचे पद ऊर्ध्व करि तब कह दुर्गा त्राहि ६२ कह देवी बचिहौ तबहिं मोसन कहिये एह । लै जैहौं मैं काष्ठ नित नरहरि आनँद गेह ६३ कीन्हों अंगीकार सो गो दुर्गा को भार । भगवत जन महिमा अमित को कबि पावै पार ६४ ॥

प्रेमनिधिकी कथा ॥

छन्दरामगीतिका । प्रेमनिधि भे बिप्र बंशम आगरे अस्थान । रहेअंतर बाह्य सब बिधि शुद्धजन भगवान ॥ मधुर सुन्दर वचन बोलत भक्ति नवधा धार । संग भगवत भक्त को कर शुद्ध भाव उदार ६५ उठतब्रह्ममुहूर्तदिन प्रति विष्णुसेवा हेत । ताय

यमुना कलश शिरधरिजात नित्य निकेत॥ एकदिन अतिभई
बर्षा कीचभोबहुराह। कीन्ह चिंता परसदिन नर निशिकि होइ
निवाह ६६ चले निशिमेंबरषतेही ठीकहिये विचारि। छुवैदिनमें
नीच कोऊ कलश भगवतवारि॥ अतिअँधेरी रातवर्षत मेघआ-
येद्वार। भक्तवत्सल कृपावारिधि रूपजन हितधार ६७ बर्षद्वादश
बालवपुकरि लिये हाथ मसाल। चले आगे प्रेमनिधिने लखो
रूपरसाल॥ घूंघवारी जासु अलकैं मदन मोहन रूप। आरसी
ले नयनमन हरवपुषशोभा नूप ६८ देखि सुन्दर रूपमोहित
होत भे तिहि काल। गयो अंतर वाह्यकोतम लखिप्रकाश म-
साल॥ कीन्हमनहिं बिचार स्वामिहि भेजिनिज घरजात। यद्-
पितद्यपि जातपीछे लखि मनोहर गात ६९ गये यमुना कूल
मज्जन कीन जल भरि लीन। शीशधरिजल कलश तत्क्षण
गमन मन्दिर कीन॥ कलश धरि भगवान मन्दिर गये ढूंढ़न
तस्य। लियो मन जिन केर हरिकैं कतहुँ पावन यस्य ७० जा-
निगे असरूप बाला चित्तहर बिन कौन। ब्रजकिशोर दयाल
करुणासिंधु पालक जौन॥ थोरिये सेवकाइ ऊपर कियपरि-
श्रम तौन। लहत वेदनं पारजासम कृपा सागर कौन ७१ समु-
झियह मन करन सेवा लाग भगवत केरि। लहत जब अवका-
शतासों कथा वर्णत फेरि॥ जातश्रोता बहुतपीछे होतकीर्त्तन
गान। होत नित्य समाज पापिन देखि अघ हिय आन ७२
दो०। बादशाह सों कहत भे अति अनर्थ है एह। जमा करत
तरुणी सकल कथा बहाने गेह ७३ चोपदार पठयो मलिक
गयो प्रेमनिधि गेह। जल प्यावन भगवानको जातरहे युत
नेह ७४ चोपदार जल्दी करी भूल गये तिहिबार। कहत भये
बृत्तांत सब जाइ मलिक दरबार ७५ बादशाह कहबात लघु कह
लोगन हैयाहँ। ताको समुझैंगे कियो भाँपिचन्द तिन काहँ ७६
बादशाह सोयो निशा तासुं इष्ट धरिदेह। लागि तृषा भगवत
कहो सो बोल्यो युत नेह ७७ धरेघड़ा बहुतै यहां आपकरैं जल

पान। यह सुनि भगवत क्रोधयुत या बिधि वचन बखान ७८
पीवत तब घट कौन जल सुन तन मेरी बात। बादशाह करजोरि
कहभययुत कंपित गात ७९ जाको आज्ञादीजिये प्यावै पानी
तौन। कह भगवत तिहि बन्द किय प्यावत पानी जौन ८०
खुले नयन तब मलिक के तिनहिं बुलायो तत्र। पग शिरधरि
करिविनय कहक्षमिय पाप ममअत्र ८१ तृषा दूरसबकी करत
लगी तृषा है ताहि। जाहु शीघ्र लीजिय मुलुक माल जौन
चित चाहि ८२ लियो कछू नहिं होबिदा गये भुवन निज
काहँ। जल अर्पण हरिको कियो मिटी तृषा क्षणमाहँ ८३॥

जयमलकी कथा॥

दो० मीरथ के जयमलनृपति भगवत भक्त सुजान। कोई
मीरा को करत छोटाभ्रात बखान ८४ दश घटिकापर्य्यंत दिन
पूजत हरिसुखदान। कोऊसेवाके समय पासन पावतजान ८५
रहो हुक्मयाभाँतिसो वधपावै जोजाइ। अरिसुनिपायोहालयह
तत्क्षणआयोधाइ ८६ सदलघेर पुरआइकै मचोअमित गुलशोर।
कहतनकोऊ नृपतिसनहिये मरणभयघोर ८७ तबनृपमाताजाइ
कै कहतभई सबहाल। बोलेनृपकछुभयनहीं भयनाशकनँदलाल
८८ पूजन सों मननाटरो जानोयह भगवान। नृपति अश्वचढ़ि
शत्रुदल नाशोजाइमहान ८९ करिपूजन भूपति उठेलगे समर
सामान। स्वेद पूर्णनिजहय निरखि अति अचरज जियआन ९०
अश्वदूसरे नृपति चढ़ि गयेकटकयुततत्र। सुदल शत्रुभूपतिपरो
ब्याकुलपुहुमीयत्र ९१ जयमलसोंपूछतभयोहै तवदल वहकौन।
श्यामस्वरूप अनूपछबिममदल नाशोजौन ९२ कहजयमलतत्र
भागसों प्रगटभयोसो आइ। मोहिंदरशदीन्हो नहीं सोवतहू में
भाइ ९३ वहबैरी गुनि चरितहरि लहआनन्द अपार। श्रीहरि
भक्तिसुहावनी कीन्हो अङ्गीकार ९४ ग्रीषमऋतु आई तहां ज-
यमलकियो विचार। अविश्वास अरुदीठता मेरीअहै अपार ९॥

नेक पवन प्रविशै नहीं जहँ सोवत भगवान। हवादार में हम रहत सुन्दर सुखदमकान ९६ रचो तिमहला एकगुनि बँगला सुभग मकान। छत्तचांदनी फर्श शुभ परदे झालर तान ९७ एकपलँग सुवरण रचित तोशकादि सजवाइ। तकिया चादरि डोरिकसि दियबाँगले बिछाइ ९८ शयन साज तैलादिशुभ धरे मिठाईपान। शयनकरावत भे हरिहि धारिमानसध्यान ९९ आपलिये हथियारकर चौकी ताकीदेत। साजसजतकर आपने हरिसेवायुतहेत १०० कीन्हों अङ्गीकार सब हरिसेवा सामान। खातमिठाईपयपियत दलतसेजघटपान १०१ प्रेम जलधि बूड़त नृपति गयेनकछुदिन गेह। नारिबुलावत बांगले नृपरानी कह एह १०२ भेदलेनऊपरचढ़ी लखोबांगले तत्र। बालक परमकिशोरबय सोवतसुन्दरयत्र १०३ पीताम्बर पहिने सुभग श्याम रूपछबिऐन। रानिभुलानीआपको लगेबाण उरमैन १०४ प्रात कहो नृपसो सुनत कियो क्रोध गुनिफेरि। धन्य नारि हरि दरशदिय कृपादृष्टिसों हेरि १०५॥

आसकरनकी कथा॥

छन्दनरेन्द्र। आसकरन नरवरगढ़राजा भीमसिंहसुत जोई। जाति कछ्वाह कील्हके चेले परमभागवत सोई॥ शूरउदार बुद्धि गुणधारक बोलतमधुरे बैना। सेवासाधु चित्तदृढ़धारण भगवत जन सुखऐना १०६ दशघटि दिनपरतकहरि सेवा करत नृपति बरसोई। आयसु वेत्रपाणिकहँ सन्मुख आवन धावन कोई॥ बादशाहत अवसर आये पठये नृपहि बुलाई। घूमिगयो हलकारातिनको कोउन खबरिजनाई १०७ बादशाह करिकैबड़क्रोधासाजिकै फौजपठाई। लिखो पत्र सेनापति बहुरो भूपतिखबरि नपाई॥ बादशाह आपुहि चालिआयो भयो भूपढिगधाई। द्वार पाल जन संगिन रोंको मन्दिर मलिक पठाई १०८ पूजा कीन्हे करत दण्डवत बादशाह लखि लीन्हा। खड़ेबेरतक रहे उठेनहिं

खड्गघात पद कीन्हा ॥ लागोखड्ग न भूपतिजानो हरिसमीप मन जासू। बादशाहगे बाहर संशयकीन्ह देखि बिश्वासू १०९ करि दण्डवत भूप जब आये सुनो मालिक हैं आये। नानाभाँति करी पहुनाई बादशाह सुख पाये ॥ निज कुसूर पुनि क्षमा कराया लाज अमित उर आई। श्रीमोहन जी राग भोगहित दिय जागीर लगाई ११० ॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्बिंशतिनिष्ठामध्येसप्तदशभगवत्सेवामाहात्म्यनिष्ठा यांदशभक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधावेकोन बिंशस्तरङ्गः १६ ॥

दो०। श्रीरघुबरपद कमलकी चन्द्र रेखको नौमि। ऋषभदेव अवतार पद करौं दण्डवत सौमि १ निष्ठा कहत अठारहीं दास्य निष्ठ जिहि नाम। षोड़श भक्तनकी कथा है बर्णन सुख धाम २ यद्यपि भगवत प्राप्तहित बहु निष्ठा सुखदानि। सबन केर परिणाम यह तद्यपि लीजिय मानि ३ सब भावन में मूल है दास्यभाव सुखधाम। भाषत वेद पुराण यह नाना बचन ललाम ४ यानिष्ठा जे भक्तहैं बरणौं तिन के नाम। जियालाल जन सुनि सुमिरिं पावत भगवत धाम ५ ॥

प्रह्लादजी की कथा ॥

चौ०। अब प्रह्लाद कथा सुखदाई। बरणौं रामचरण शिर नाई ॥ अग्रणीय दासनमें जोई। भगवत धर्म प्रकाशक सोई ६ बिदित पुराणन में बिस्तारा। इनकी कथा अहै सुख सारा ॥ ताते मैं संक्षेप बखानौं। भगवत भक्त चरण उर आनौं ७ हिरण्याक्ष कहँ जब हरि मारा। धरिबाराहरूप अति भारा ॥ कश्यप हिरण क्रोध अति कीन्हा। एक छत्र हित तप मन दीन्हा ८ सूनो जानि इन्द्रतहँ आये। लूटन भंजन गृह मनलाये ॥ पकरोनारि गर्भ प्रह्लादा। लेकर चले सहित अह्लादा ६ नारद आइ छुड़ा-

वत भयऊ। तिहि उपदेश बिबिध बिधि कयऊ ॥ सो प्रह्लाद
सुनो मुद गहिकै। आव हिरणकश्यप मुद लहिकै १० तीनों
लोक जीति सो लीन्हा। सुरन जीति कारागृह दीन्हा ॥ पुहिं
प्रह्लाद जन्मतहँ लीन्हा। बिप्रासीशत यहकहिदीन्हा ११ स्वामी।
दैत्यपति बचनरसाला। कुल पवित्रकरिहै यह बाला ॥ पुरुषा न्ना।
परमपदभागी॥सुनिहिरण्यकश्यपअनुरागी १२बिप्रनदानविबिध
बिधिदीन्हा। लालन पालन सुतकर कीन्हा ॥ पांचवरषकरसुत
जबभयऊ। पढ़नहेतु आयसुसो दयऊ १३ शुक्रसुवनढिगपढ़-
नपठायो। सादरतौन पढ़ावनलायो ॥ रामनाम प्रह्लादपुकारा।
सुनतगुरूकि यक्रोधअपारा १४ नानाभाँति नीतिबतरावत। पर
प्रह्लादहि एकनभावत ॥ कहहिरण्यकश्यप इकबारा। कासुतपढ़े
करियउचारा१५ रामनाम प्रह्लादसुनावा। सोसुनिकै अतिक्रोधब-
ढ़ावा ॥ यहहै नामशत्रुममजोई। तोकंहँ कौनपढ़ायो सोई १६
सुनहु पिताहै अति सुखधामा। यहै नाम नामिनंदे नामा ॥ सब
धर्मनमें धर्मकहावै। सबविद्यों में शोभा पावै १७ तुमहूँ नाम
जपौ पितुएहा। याकेजपे न कछु सन्देहा ॥ सुनि हिरण्यक-
श्यप करिक्रोधा। लीन्ह बुलाइ तुरित निज योधा १८ कहा
मारिडारहु यह बालक। जपत शत्रु मम यह उरशालक ॥ सो
सुनि करिकरि क्रोधअपारा। हनतभये आयुध खरधारा १९
नेक अंगमहँ चोट न आई। योधा सकल रहे शिरनाई ॥ दीन्ह
शिखीमधि तिनहिं डराई। जरे न सरिता दीन्ह डुबाई २० बूड़े
नहिं पर्वतसो डारा। तहां राखि लीन्हों करतारा ॥ करिहारो
नहिंचलो उपाई। बहुरि पढ़न शालाहि पठाई २१ पाठक कहुँ
कारजहित गयऊ। बालक सकल बोलि तिन लयऊ ॥ तिनसों
कहत भये समुझाई। यह संसार असार महाई २२ नश्वर है
ताको ब्यवहारा। यामें रामनाम है सारा ॥ है सर्वत्र सर्वगत
सोई। सोइदुखी ता बिमुख जुहोई २३ भगवत भजन हेत तनु
एहा। नाहिंत पशु पच्छी समदेहा ॥ नारदजी जो मोहिंबतायो।

सो तुमको मैं सकल सुनायो २४ भगवत शरण गहे कल्याना।
जाति पांति नहिं लखत निदाना॥ मैंहूहौं कुलजाति तुम्हारे।
[illegible]वौ हरि संकट किमिटारे २५ तिन उपदेश पाइ अनुरागे।
[illegible]वत भजन करन सो लागे॥ गुरूआइ देखत भे जबहीं।
[illegible]ति पाहँ कहो सबतबहीं २६ सुनत भूप किय क्रोध अपारा।
तीक्षण खड्ग हाथ निज धारा॥ प्रह्लादहि मारन सो चाहा।
पुनि इमि कहत भयो नरनाहा २७ कौन अहै रक्षक अब तेरा।
ताको नाम कहिय या बेरा॥ कहो कुंवर रक्षकमम सोई। व्या-
प्तचराचर में है जोई २८ है खंभाहू कह तू जौन। कहप्रह्लाद
अवशिहै तौन॥ मुष्टिक एक खम्भ में मारो। ताक्षण हरिनृ-
सिंह बपु धारो २९ अररररखम्भा फटि गयऊ। तमिचरत्रसे
शोर अति भयऊ॥ चौंकि उठे दशहू दिगपाला। कमठ शेष
भूभूधर चाला ३० बिकटरूप धारो भगवाना। देखि शकान
असुर बलवाना॥ लपलपात जिह्वा बिकराला। मनहुँ कराल
कालकर बाला ३१ बिकट आस्यरददंष्ट्र कठोरा। मानहुँ ग्रसहिं
जगत बरजोरा॥ अग्नि ज्वालसम नयन कराला। असुरन भ-
स्मकरन चहहाला ३२ सटाक्षेप घनमाल भ्रमावत। संभ्रम सुर
बिमान उपजावत॥ नख बिकराल महा भयकारी। नरशार्दूल
अर्द्ध बपुधारी ३३ सभा मध्य लखि रूपकराला। कश्यप पुरट
लियो करबाला॥ पुनि क्रोधित इमि बचन सुनायो। बहुदिन
ढूंढ़ि आजु इहिपायो ३४ यह कहि युद्ध करन सो लागो।
नानादावँ पेंच रिसपागो॥ दोनों कीन्हों क्रोध अपारा।
प्रलय होन चह जनु संसारा ३५ क्रोधित गरजहिं दोउ अ-
पारा। सो धुनि पूरिरही संसारा॥ इमि क्रीड़ित नृसिंह भग-
वाना। मारत भये असुरबलवाना ३६ जहँ मुलतान देश
रजधानी। सभा स्वर्ण कश्यप सुखदानी॥ युद्धारम्भ भयो म-
ध्याना। सायंकालवधो भगवाना३७ ऊरुपछारिनखन उरफारा।
ब्रह्मबचन कीन्हों प्रतिपारा॥ हर्षित देव सकल तहँ आये।

करि जयशब्द सुमन बरषाये ३८ अस्तुति सकल दुरितेकरहीं।
जातन निकट रूपलखि डरहीं॥ तब प्रह्लाद विनय सुरकरिकै।
आगे करि आये मुद भरिकै ३९ श्री प्रह्लाद नभय कछु लीन्हों।
निकट जाइ अस्तुति बहु कीन्हों॥ हेप्रणतारति भंजन स्वामी।
करौं जोरिकर कोटि नमामी ४० क्रोध पूर्ण तवरूप कराला।
देखि भयातुर देव बिहाला॥ कांपत गात बात नहिं आवै।
कृपासिंधु बिन को अपनावै ४१ सुनि प्रह्लाद बचन भगवाना।
अभय दान दै सुर सनमाना॥ कह प्रह्लाद पाहिं बर लीजै।
अनपावनी भक्ति प्रभु दीजै ४२ जहँ जहँ जन्म लेउँ मैं स्वामी।
होउ तहां रावर अनुगामी॥ बरके हेत भुलाइय नाहीं। जग
के सुख दुख सकल वृथाहीं ४३ जो बर देन चहियमंमनाथा।
तौ यह दीजिय नावों माथा॥ पातक अमित पिता ममकीन्हा।
कुबचन कहन आपुकहँ लीन्हा ४४ कृपा करिय सो नरकन जावै।
सुनि नृसिंह इमि बचन सुनावै॥ धन्य पुत्र जाके तुम भयऊ।
पिता तुम्हार परमपद लयऊ ४५ यह कहि प्रह्लादहि उरलाये।
धन्य भाग हरिभक्त सुहाये॥ वह शोभा कछु बरणिन जाई।
श्री नृसिंह छबि अद्भुत गाई ४६ कोटि सूर्य शोभा नहिं तेती।
भगवत मुख छबि देखिय जेती॥ रुधिर बुन्द सोहत अतिनीके।
नेत्रारुण भयदायक जीके ४७ भूरी मूछ सटा अति पीले।
कहुँ कहुँ देखि परतहैं नीले॥ कर बलिष्ठ दोऊ अति राजैं।
नखकराल तीच्छण छबि साजैं ४८ वक्षस्थल तीक्ष्ण अतिसोहै।
अंतमाल अरिचित्त विमोहै॥ लपलपात जिह्वा मुख चाटत।
पुच्छ शीश जनु अरिकुल दाटत ४९ याविधि हरि समेतआह्ल-
दा। लागे तिलक करनप्रह्लादा॥ अस्तुति करनलाग सबदेवा।
बरषैं पुष्प जनावैं सेवा ५० लगे दुन्दुभी बजन अकाशा।
नृत्य अप्सरा करहिं प्रकाशा॥ गन्धर्ब गान करत सुखदाई।
जैजै कार रही तहँ छाई ५१ कीन्ह तिलक याबिधि भगवाना।
आपु भये पुनि अन्तरधाना॥ सबसुरगे समेत आह्लादा।

लागे राज्य करन प्रह्लादा ५२ देशन भगवत भक्ति चलाई। कोऊ बिमुख न परत लखाई॥ नीति समेत बसे रजधानी। पुत्र समान प्रजा सब जानी ५३॥

अंगदजी कपिकी कथा॥

चौ०। अङ्गदनाम बालिसुतजोई। भगवत भक्तरह्यो अतिसोई॥ युवा अवस्थामें सबलायक। प्राप्त्यैश्वर्य्य राज्य सुखदायक ५४ मनकी वृत्ति तदपि हरि चरणा। नेक न तजी रहतानितशरणा॥ लखि सुग्रीव दुखी रघुनन्दन। बाली कहँ जबकियो निकन्दन ५५ पर अङ्गद तहँ धर्म बिचारी। हियसों नेकन भक्ति बिसारी॥ बल्कि प्रसन्न भये मन माहीं। राज्य योग बाली रहनाहीं ५६ सीता खोजनके हित गयऊ। नानाक्लेश सहत तहँ भयऊ॥ बाली सुतको चरित सुहावा। हैरामायण में बहुगावा ५७ कछु-क इहांपर कहौं बखानी। भक्त कथा अतिआनँद दानी॥ राव-णसभाजबहिं चलिगयऊ। पठव बसीठराम सुखभयऊ५८प्रश्नो-त्तर बहुबिधितहँ भयऊ। रावण कहन बचन इमिलयऊ॥ सब म-नुष्य जिमि राम बिचारा। सुनिअङ्गद किय क्रोध अपारा ५९ असुर चचाल काल बपुदेखी। रावण काँपतभयो बिशेखी॥गि-रतभयो सिंहासन तजिकै। गिरेमुकुट अङ्गदलिय गजिकै६०कछु उठाइ रावण शिरलाये। कछुअङ्गद प्रभुपास चलाये॥ उत्तर प्र-त्युत्तर पुनिभयऊ। चरणरोपि अंगद तब दयऊ ६१ रावण सो कीन्होंप्रण एहा। बचन कहत हमनहिँ सन्देहा॥ चरण उठावै यह ममकोई। घूमहिं रामसिया बिनसोई ६२ यह सुनि उठेहर्षि बलवाना।इन्द्रजीत आदिकभट नाना॥हारिगये नहिं उठैउठावा। जनुभू संगबिरंचि बनावा ६३ कामी बचन सतीमनब्यापै। ह-रिजन मन आपत्तिनचापै॥ जिमिकरि बिनाभजन भगवाना। दुखसंसार नछूटै नाना ६४ बैठतभे लजाइ सबबीरा। उठरावण करिक्रोध गंभीरा॥ चरण उठावन हितचल जबहीं। शिक्षाक-

रिअंगद कह तबहीं ६५ गहिये जाइ चरण रघुराई। ममपद गहे न होइ भलाई॥ बैठोरावणं लज्जापाई। ऐसो भक्ताङ्गदरघुराई ६६ ऐसो भगवत में बिश्वासा। प्रणके करतनकीन्हीं त्रासा॥ लंका जीति रामघर आये। तिलकपाइ जगआनँद छाये ६७ तब अङ्गद प्रभु आज्ञापाई। गेघर हियधरि पद रघुराई॥ सुमिरण भजन करत इमि भयऊ। हरिपद तजिमन अनतनगयऊ ६८॥

पीपाजीकी कथा॥

चौ०। पीपाभगवतभक्त सुहाये। भक्ति प्रताप सकल जग छाये॥ गागरौनगढ़ भूपति सोई। दुर्गा भक्त प्रथम रहजोई ६९ भगवतभक्त एकदिन आये। भोजन सामातिनहिं दिवाये॥ उन भगवत परसाद बनायो। हरि अर्पण करि बचन सुनायो ७० राजाभक्त होइहरिकेरो। इमि दियआशीर्वादघनेरो॥ ताही निशा स्वप्नके माहीं। कोउ सिखायो भूपति काहीं ७१ तूहै नृप मतिमन्द अपारा। भगवत बिमुख चहतउद्धारा॥ प्रेतएक तदनन्तर आयो। रूपभयंकर प्रगट दिखायो ७२ पुनि भूपति कहँ लियो उठाई। पटक्यो भूमेअभित भ्रमाई॥ ताहीक्षण सो नृप यशखंभा। भगवत भक्ति कीन्ह आरंभा ७३ सबरचना जगकी हैजेती। नाशमानदेखी सबतेती॥ दुर्गा प्रगटभई तिहिकाला। पीपाजी पूँछतभे हाला ७४ भगवत भक्ति प्राप्तकिमि होई। कह दुर्गा सुनिये नृपसोई॥ रामानन्द गुरूनृपकीजै। शिक्षा पाइ भजन मनदीजै ७५ अन्तरधानभई इमिभाषी। पीपारामानँद अभिलाषी॥ काशीकाहँतुरित चलिआये। रामानन्दहि बिनय सुनाये ७६ रामानन्द कहो समुझाई। यहं घरहै त्यागिन कर भाई॥ राजाकेर काहइत कामा। सुनि भूपति आये फिरि धामा ७७ त्यागीरूप धारि पुनि गयऊ। रामानन्द कहत इमि भयऊ॥ कूप माहँ गिरिये अबजाई। पीपाचले सुनत सुखपाई ७८ गिरत देखि शिष्यन गहि लीन्हा। रामानन्द मंत्र तब दीन्हा॥

भगवत भक्ति दियो सुख पाई। याबिधि कहत भये समुझाई॥ ७६ सेवा साधु करौ घरजाई। एकवर्ष महँ सुनि सिवकाई॥ भक्तनसह आउब तवगेहा। पीपाघर आये सुनि एहा ८० बीते वर्षपत्र लिखराजा। आइय राखि बचनकी लाजा॥ रामानन्द चले सुख पाई। सँगकबीर रैदासलवाई ८१ चालिस शिष्यसंग लैगयऊ। पीपा लखि अतिआदर कयऊ॥ नगर निकट पहुँचे जब आई। पीपामिले अग्रसुनि धाई ८२ सहित समाज भवन निज लाई। सेवाकरत भये सुखपाई॥ रामानन्द कछू दिन माहीं। चाहे जान द्वारका काहीं ८३ पीपा बिकलभये अति भारी। तबरामानँद कहो बिचारी॥ रहिये इतचहिये सुखजोई। सँगचलिये भिक्षुक तनुहोई ८४ अंगीकार कियोसो राजा। साथ चलनहित कीन्हों साजा॥ बारहरानी तिनसँग लागी। फेरोनृप बुझाइ बड़भागी ८५ छोटी रानी फिरी न सोई। कहसहिहौं सँग दुख सुख जोई॥ कमली प्रहिरौं नग्नरहाऊं। पति बिहीन नाहिं पलक बिताऊं ८६ रामानन्द सौगंद दिवाई। तब ताको सँग चले लवाई॥ ब्राह्मण एक चलो सँग तवहीं। खायो गरलमना किय जबहीं ८७ त्यागत प्राणभयो दुखकैके। लिय जियाइ चरणामृत देके॥ ब्राह्मणबहुरिघूमि घरआयो। यह समाज द्वारका सिधायो ८८ पहुँचे सकल द्वारका जाई। दर्शन यात्रा किय सुख पाई॥ काशी कहँ रामानँद गयऊ। पीपारहत द्वारका भयऊ ८९ एकदिवस मनमें यह आई। कृष्णदरश करिये सुखदाई॥ बारिधि कूदिपरे यह भाखी। सीतासह भगवत उरराखी ९० देखी तहां द्वारका जाई। सुवरण रचित महासुखदाई॥ अद्भुत रचना लखि सुखपाये। कृष्ण दरश पुनि लहेसुहाये ९१ रहे सातदिन आनँद पाये। भगवत आज्ञा सो पुनि आये॥ दीन्हछाप भगवत तिनकाहीं। मुक्तिदानि ममसम जगमाहीं ९२ जोकोऊ यह छाप छपैहै। निश्चय मुक्ति पदारथ पैहै॥ लैपीपा सीतासह आये। लोग देखि मन अचरज लाये ९३

पीपाछाप पुजारिन दीन्हा। याविधि बचन कहन पुनि लीन्हा ॥
जिहि शरीर यह जाइ लगाई। होइ मुक्त जगजन्म न पाई ६४
यह प्रताप पीपा कर देखी। लागि भीड़ तहँ होन विशेखी ॥
तब पीपा तहँ सो चलि गयऊ। षष्ठमञ्जिल जब पहुँचत भयऊ
९५ लश्करमिलो पठाननकेरा। सुन्दरतन सीताकोहेरा ॥
पीपापाहँ छीनि उनलीन्हा। हरिसुमिरण सीतातब कीन्हा ९६
तुरतहि आइगये भगवाना। दुष्टनहति सीता कहँ आना ॥
पीपाकह सीतापहँ तबहूं। मन्दिर घूमिजाहु तुमअबहूं ९७ होत
उपद्रव तुम्हरे हेता। तबसीता कह न्याय समेता ॥ कबदुख
सहे आपु ममहेता। कवनकृपाकिय कृपानिकेता ९८ मम आ-
पहुको भई परीक्षा। तबहूंनाथ देत यह शिक्षा ॥ लखिनिश्चय
पीपा सुखपाये। मार्ग दोसरे बहुरि सिधाये ९९ तापथ मिलो
व्याघ्र इकआई। ताको चेलालियो बनाई ॥ भगवंतभक्ति ताहि
उपदेशा। अजहूं व्याघ्र जौन तिहिदेशा १०० गोब्राह्मण कहँ
मारत नाहीं। चलतभये आगे मगमाहीं ॥ पहुँचतभये ग्राम
इकजाई। तहां हाटदेखी सुखदाई १०१ लाठी बेंचत रह नर
कोई। मांगत एकभये तहँ सोई ॥ सोकह कानन काटहु जाई।
सुनि पीपा दिय सकल जमाई १०२ शाखा पत्र भये तिहि-
काला। हरित बेणु बनभयो रसाला ॥ लाठी एक काटि तहँ
लीन्हा। गमनभक्त चीधर घरकीन्हा १०३ चीधर लखिलह
आनँद भारी। पूजेपग सानँद सहनारी ॥ रहोअन्न नहिंभोजन
हेता। तियलहँगालै धर्मनिकेता १०४ बेंचिहाट सामग्री लाये।
प्रेम सहित भोजन बनवाये ॥ जब पीपा हरि भोगलगायो।
भक्तन भोजनहेत बुलायो १०५ चीधर भक्त प्रेमयुत आये।
तब तिनकी तियकाहँ बुलाये ॥ चीधर कह पाइय परसादा।
पीछेलेहै शीतप्रसादा १०६ पीपाकह सीताहि बुलाई। काह
हाल देखहु तुमजाई ॥ सीताजाइ लखी वहनारी। कोठी बैठी
नग्न बिचारी १०७ सीताकहो काहयहहाला। चीधर नारि

कहो तत्काला ॥ होनोबस्त्र न होनो जोई । सुख दुख परम अहै नहिं सोई १०८ भगवतरूप चिंतवन जोई । सेवा साधु परम सुखसोई ॥ सीता सकल हाल तबजाना । तिनकी भक्ति धन्य करिमाना १०६ आपनि भक्ति महालघुमानी । अर्द्ध बसन दीन्हों निजआनी ॥ ताहि पहिरि सो बाहर आई । एकसाथ भोजन चितलाई ११० सीता पीपा लखि सिवकाई । तिन मनमें बिचार यहआई ॥ देइँ विशेष द्रब्य इहिबारा । सीतापीपा गेबाजारा १११ सीता वेश्या जातिबताये । विषयी अमित तहां चलिआये ॥ देखिसकोपरको इनतामें । तेज अपार भक्ति हरि जामें ११२ कोउनकहो हँसीकी बातैं । ताकत करि नेत्रनकी घातैं ॥ कोऊ अन्नस्वर्ण लैदयऊ । देतरूपया कोऊ भयऊ ११३ याबिधि बहुत द्रब्य तहँ पाई। देत भये चीधरकहँलाई ॥ चीधर द्रब्य देखि वहलीन्हों। बांटि तुरित भक्तनकहँ दीन्हों ११४ जैसेरह तैसे रहिगयऊ। बिदाहोइ पीपां चलिगयऊ॥ ठोडा शहर पहूँचेजाई । गमज्जन पुष्कर इकदाई ११५ मुद्रास्वर्ण भरो घटदेखा । निशि सीतासो कहो विशेखा ॥ सुनिकै चोर गये तहँ धाई। घटमहँ चकी परो लखाई ११६ कहचोरन डारियतहँएहीं ।हमकोचहो दसावन जेही ॥ लीन्हों चोरन घड़ा उठाई। डारतभे पीपाढिग आई ११७ मुहर सातसौबीस सुहाई । पीपालीन्हीं सकल उठाई॥ तीनदिवसलगि आनँद भारा । साधुनकर कीन्हों भण्डारा ११८ सूरसेन तहँ भूप बिराजा। पीपाढिग आयो तजि लाजा ॥ चरणन परि यह विनय सुनाई । मोहिं आपनो लेहु बनाई ११९ पीपा कहो राज्यधन जेता । रानी कोशदेहु सब तेता ॥ भूपति कहो नाथ सब लीजै । मोको मंत्र कृपाकरि दीजै १२० यहकहि नृप रानी बुलवायो । राज्यादिक दै शीशनवायो ॥ तब पीपा दीन्हों उपदेशा । दियो फेरि रानीसहदेशा १२१ कहत भये पुनि भूपति पाहीं । परदा करिय भक्त सों नाहीं ॥ भक्तनकी सेवा नितकरियो । आज्ञासदा शीशपरधरियो १२२ भाई बंधु नृपति

केजेते। पीपासों मन क्रोधित तेते॥ वृषभखरीदनको बनजारा। फिरत एकनृप बंधु निहारा १२३ कहो बैल पीपापहँ नीके। लीजिय जाइ भावते जीके॥ सुनि बनजारा तहँ चलिआयो। वृषभलेन हित द्रव्यगनायो १२४ पीपा जानि हाल तिहिपाहीं। कह वृषचरनगये बनमाहीं॥ कछुकबेरमहँ आइय भाई। तबहिं वृषभहमदेब हँकाई १२५ यह सुनि जातभयो बनजारा। पीपा तासों किय भण्डारा॥ साधु सहस्रन भीर अपारा। ताक्षण आवत भो बनजारा १२६ बिनय कियो बैलन हित जबहीं। पीपा कहत भये इमि तबहीं॥ ठाढ़ वृषभ सहस्रनएई। चाहिय जौन लीजियेतेई १२७ बड़भागी बनजारा गायो। साधुन दरशपाइ सुखपायो॥ भगवत शरण भयो सुखपाई। साधुन कहँ दिय अम्बर लाई १२८ एकसमय पीपा सुदधारी। गये अश्वचढ़ि मज्जनबारी॥ दीन्ह तुरङ्ग छोंड़ि तटमाहीं। दुष्टन लियो चोरि तिहिठाहीं १२९ जब पीपा मज्जन करिभयऊ। चलिबेकीइच्छा मनकयऊ॥ ठाढ़ो भयो अग्रहय आई। भे सवार तापरसुखपाई १३० एकसमय पीपा कहुँ गयऊ। भक्तनको समाज तहँ भयऊ॥ साधू आइगये गृहमाहीं। भोजन की सामग्री नाहीं १३१ सीता तबहिं हाटमें आई। बणिक एकसों कहो बुझाई॥ हमहिं देहु भोजन की सामा। आवौंगीनिशिमें तवधामा १३२ सुनत बणिक दीन्हीं सबसामा। साधुन लाइ दीन्ह निजधामा॥ ताही क्षण पीपा चलिआये। सीता भक्ति देखि सुखपाये १३३ पीपासों सबहाल बतायो। निशा समय शृंगार बनायो॥ ताही समय मेघझरिलाई। पीपा लीन्हों पीठिचढ़ाई १३४ मन्दिर बणिक पहूँचे जाई। सीताबणिक समीप सिधाई॥ देखत बणिक ज्ञानभो हाला। सूखे पाद लखे तिहिकाला १३५ कह माता का बिधि चलिआई। स्वामी लाये पीठिचढ़ाई॥ ठाढ़ेअहैं द्वार पर जोई। सुनत धाइ पहुँचो तहँ सोई १३६ चरणन गिरिबिह्वल अति भयऊ। पीपा कहन बचन इमि लयऊ॥ लज्जाकरन

काज कछु नाहीं। भोगहु नारि भवननिजमाहीं १३७ सुनत लाग रोवन सो भारी। पीपा हिये दया विस्तारी॥ दीक्षा दीन्ह दुःखसब टारे। सीता सह पुनि भवन सिधारे १३८ यह वृत्तान्त नृपति सब जाना। सूरसेनहो बश अज्ञाना॥ बे बिश्वास भयो तिहि काला। पीपाने जानो यह हाला १३९ आइद्वार बोलायो जबहीं। पूजा करत कहो नृप तबहीं॥ कह पीपाहै मूरुख राजा। मिथ्या भाषतहै किहि काजा १४० जूतीहित गो भवन चमारा। कहत कि पूजा करत गवांरा॥ सुनत भूप आ-तुर उठिधायो। चरणन परि बहु बिनय सुनायो १४१ नृपति भवन बन्ध्याइकरानी। लावहु पीपा कहा बखानी॥ सुनत भूप मन्दिर निज गयऊ। तहँ इक ब्याघ्र बिलोकत भयऊ १४२ घूमे नृप कह भयो बहाना। पीछे ब्याघ्र लखत भे आना॥ पीपा की जानी सिद्धाई। मन्दिर माहँ गये नरराई १४३ रानी गोद बिलोको बाला। जन्मत भयो जौन तत्काला॥ नृप बिश्वास भयो उरभारी। गुरुपद परे नयन भरिबारी १४४ तब पीपा बालक तनजाई। नृपसों कहत भये समुझाई॥ अरे मूर्ख बिश्वास घटायो। चाहिय दिन दिन होत बढ़ायो १४५ गुरु बिश्वास जासुउर नाहीं। उभयलोक सुखतासु नशाहीं॥ दैशिक्षा बहुभांति बुझाये। पीपा बहुरि भवन निज आये १४६ विषयी एक तहां चलिआयो। ऊपरसाधू वेषबनायो॥ तमीभरे को सीतहि मांगा। पीपा दियो सहित अनुरागा १४७ सीता सँगलै भागतभयऊ। कलनहिं कतहुँ निशाभरि लयऊ॥ गयो दूरिभागतलै सोई। पीपासों जिहि भेंटनहोई १४८ चलीनिशा पति बचन बिचारी। बैठी सीता प्रात निहारी॥ ग्रामहि गयो यानहित सोई। सीतारूप लखीतिय जोई १४९ भयो ज्ञान फिरिकैसो आयो। सीता चरणन शीशनवायो॥ चेलाहोत भयो खिसिआई। सीता पुनि पीपा ढिग आई १५० वि-षयी चारि एक दिन आये। सुन्दर साधू वेष बनाये॥ पीपा

सों सीता कहँ मागा। पीपा दियो सहित अनुरागा १५१ सी-
ता बैठिकोठरी जाई। बिषयी जात भये हरषाई॥ व्याघ्री एक
बैठितहँ देखा। आये पीपा पास बिशेखा १५२ तुम कैसे साधू
छलकारी। मन्दिरमें बाघिनि बैठारी॥ कह पीपा बाघिनि है
नाहीं। वह सीता बैठी घरमाहीं १५३ जा बिधि है चित वृत्ति
तुम्हारी। ता बिधि सीता परत निहारी॥ शुद्ध भाव सो देखहु
जाई। तुम कहँ सीता परिहि लखाई १५४ सुनत बचन चारहु
चलि आये। सीता के शुभ दर्शन पाये॥ बैठेचरणन शीश न-
वाई। चेलाहोत भये शरमाई १५५ दो०। तेलिन बेंचत तेल
इक पुनि पुनि कहत पुकार। तेललेउ पीपा सुनत कहे बचन
श्रुतिसार १५६ रामनाम यामुख कहौ कैसी शोभाहोइ। क्रोध
सहित बोलत भई पीपा जी से सोय १५७ राम नाम तब कहत
हैं मरत भवन जब कोइ। बेंचि भवन जबहीं गई लखो मरोपति
सोइ १५८ रोवत पीपा पहँ गई परी चरण बिलखाइ। ज्यायो
वृद्ध सबालकन राम कहन सखराइ १५९ आई महिषी एककहुँ
साधुन सेवा हेत। चले चोर लै छोरि तिहि पीपा जागि निकेत
१६० बच्चा लै पीछे चले कहइमि बचन सुनाइ। या बिन देहे
दूधनहिं लिये जाइये भाइ १६१ सुनत चोर आधीन भे महिषी
ग घर राखि। जियालाल हरिजन चरित को कबिपावै भाखि१६२
लीन्हे आवत एकदिन शकट भरेसो अन्न। मुद्रारजत समेतलखि
तस्कर भयेप्रसन्न १६३ चौ०। लीन्हों तत्क्षण शकट हँकाई। तब
पीपा बोले सुख पाई॥ मुद्राहू लै जाइय भाई। लीजौ चीनी घृतहु
मँगाई १६४ सुनि बटपार शरण तिनआये। गाड़ी पीपा घर
पहुंचाये॥ रुपया एक महाजन केरा। साधुहेत भो करजघ-
नेरा १६५ कईबेर मांगत भो जोई। यह वह कहि टारत भे
सोई॥ एकसमय कीन्हीं कठिनाई। कहपीपा हम चहत न भाई
१६६ तब वहचलि हाकिम पहँ गयऊ। कागद सब हिसाबकर
दयऊ॥ अक्षर एक लिखानहिं देखा। हाकिमकीन्हों क्रोधबि-

शेखा १६७ दण्डदेन हित कियो उपाई। तब तिहि पीपा लियो बचाई॥ कागद फेरि सकल लिखिगयऊ। पीपा सब रुपया दै दयऊ १६८ ब्राह्मण एक गऊ बधकीन्हा। तिहि निकारि घर लोगनदीन्हा॥ सोपीपा शरणागत आयो। तिहि भगवत परसाद खवायो १६९ राममंत्र तिहिं दियो सुनाई। बिबिध भांति उपदेश बताई॥ तबहूं जानभवन नहिं पायो। तब पीपा सबको समुझायो १७० रामनाम माहात्म्य अपारा। ग्रंथन माहँ कहो बिस्तारा॥ एकहुबार राम कहजोई। कोटिन गोबध अघबध होई १७१ धोखे रामनाम मुखआवै। कोटिजन्म के पाप नशावै॥ यागोबध की केतिक बाता। नशै पाप कोटिन इहिगाता १७२ सुनि सब के मन निश्चयआई। वाको लेतभये अपनाई॥ एकादशी दिवस इकबारा। होत जागरण आनँद भारा १७३ पीपाहाथ मलो तिहिकाला। लोगन कहो काह यह हाला॥ कहद्वारावति देशरसाला। हरिचँदवा लगि आगिबिशाला १७४ ताको लगे बुझावन भाई। सुनि भूपति सांड़िनी पठाई॥ कहो पुजारिन सतिहै बाता। औरौ एकबातहै ताता १७५ एकादशि ब्रत काहँ सदाहीं। पीपा रहइत जाग्रण माहीं॥ धौवन कहो आइनृपपासां। सुनि भूपति आनन्द प्रकासा १७६ दो०। मिलन हेत श्रीरङ्ग के गे पीपा इकबार। माला पहिरावन चहत मानसि रंगाचार १७७ अटकत है सो मुकुट में कहपीपा सुखपाइ। काबिधि पूजाकरत हो सकनमाल पहिराइ १७८ यह सुनि उठिधावत भये मिलत भये लपिटाइ। कीन्हों आदर बिबिध बिधि शुभआसन बैठाइ १७९ अपरबहुत पीपाचरित अतिबिचित्र सुखसार। जियालाल लहपार किमि अति मतिमन्द गवांर १८० ॥

कथा प्रयागदास की ॥

चौ०। कथाप्रयाग दासकी एहा। बर्णन करौं चरण करि

नेहा॥ अग्रदास के शिष्य कहाये। भगवत भक्तन में धनि गाये १८१ रघुनन्दन चरणन रति आनत। हरिभक्तन भगवत समजानत॥ भगवत मन्दिर ग्राम कियारा। कलश हेत उत्साह अपारा १८२ भगवत मन्दिर अपर सुहावा। आदिव बलिया ग्राम कहावा॥ ध्वजा चढ़न उत्साह अपारा। तब इन निज मनमाहँ बिचारा १८३ दोनों जगह साधु हैं आये। द्वै स्वरूप निज तुरित बनाये॥ कलशध्वजा निजहाथ चढ़ाये। साधुन सहित महासुद पाये १८४ रासहोन लागो तिहिकाला। देखो भगवत रूपबिशाला॥ रूप माधुरी देखो जबहीं। बिह्वल होइ तजो तनु तबहीं १८५ दो०। जाइ परमपद प्राप्तभे जौन अचल सबकाल। सूर्यादिकनहिं देखिये है निजधामबिशाल १८६॥

भगवान्‌की कथा॥

चौ०। भगवतभक्त नामभगवाना। सोनेपतमें बासस्थाना॥ हरिसों बिमुख जहां सुनि पावैं। तहांजाइ हरिभक्त बनावैं १८७ पड़रीग्राम एक सुख पांती। योगिन की तहँ रहत जमाती॥ भगवतभक्त तिनहिं करि दीन्हा। निज सिद्धता प्रगट तेहँ कीन्हा १८८ करामात तिन लखन महाई। बादशाह दिय जहर खवाई॥ भगवत कृपा व्यथा नहिं दयऊ। बादशाह सुनि लज्जित भयऊ १८९॥

रामराय की कथा॥

चौ०। रामराय हरिभक्त सुजाना। साधू सेवा में हित माना॥ साधुसमाजरहे इकबारा। बैठरहें तहँ संत अपारा १९० पूरुष कोऊ चित्त मलीना। रामरायकी निन्दा कीना॥ भगवत सो यह सहा न गयऊ। यह आश्चर्य होत तहँ भयऊ १९१ जनु कोऊ करतल शिरमारा। तिहि उष्णीष तुरित महि पारा॥ सो तत्क्षण लज्जा अतिपाई। बाहरजातभयो खिसिआई १९२॥

श्रीरंग की कथा ॥

चौ०। जयपुर राज्यदेव साग्रामा। तहँ श्रीरंगभवन सुखधा-
मा ॥ रह सरावगीके सुत सोई। मरतभयो तिन सेवककोई १९३
सोयमदूत भयो तिहिकाला। नगरं माहँ आयो सो हाला ॥
टिको एक तहँ रह बनजारा। ताके प्राणलेन पगुधारा १९४
इनसों मिलो प्रीति पहिचानी। सकल कथा निज कही बखा-
नी ॥ सुनतरंगके इच्छा आई। देखन हेत गये तहँ धाई १९५
तब यमदूत तहां चलि आयो। वृषभ एकको पुनि भड़कायो ॥
बैठो तासु शृंगपर जाई। बनजारा कहँ लियो उठाई १९६ पेट
फारि तत्क्षण तिहि मारा। देखि रंग अतिही भयधारा ॥ तासों
पूंछत भये उपाई। या बिधि मरण बचै किमि भाई १९७ भग-
वत भक्ति बिना सुखकारी। पीड़ा होत यही विधि भारी ॥ भग-
वतभक्त जौन जगमाहीं। तिन समीप यमदूत न जाहीं १९८ या
बिधि सुनत दूतमुख बानी। भगवत भक्ति हिये निज आनी ॥
शिष्यानन्तानँद के भयऊ। धर्म सरावग निज तजि दयऊ
१९९ अल्पकाल महँ हरि पहिंचाना। जन्म मरण भय तजो
महाना ॥ एक प्रेत नित तिन घर आवै। रंगपुत्र को तौन
लखावै २०० दुर्बल होत जात नित सोई। जानो रंग हाल यह
जोई ॥ पौढ़ेतासु खाट इकदीना। आवत भो तहँप्रेत प्रवीना २०१
देखत ताहि लियो रपटाई। भगो प्रेत आतुर भय खाई ॥ कहत
भयो मैं अहौं सुनारा। यही ग्राम है भवन हमारा २०२ परतिय
गमनहुं चोरि झुठाई। कुत्सित कर्म प्रेत भे आई ॥ निज उद्धार
हेत नित आवत। और न कछु कारज मन लावत २०३ सुनि
श्रीरंग दया उर आई। हरि चरणामृत दीन्ह पियाई ॥ तासु
प्रभाव दिब्य तनु धारा। सद्गति प्राप्त भयो जग]पारा २०४ ॥

हठीनारायण की कथा ॥

चौ०। कथाहठीनारायण एहा। बरणौं धारि संतपद नेहा ॥

कृष्णदास के शिष्यकहाये। रहत देश पंजाब सुहाये २०५ परम भक्त भगवत के सोई। युत सन्तोष भजन कर जोई ॥ पीवत भांग सरुचि सबकाला। बादशाह जानो यहहाला २०६ दिय पिलाइ धत्तूर मिलाई। कछुनहिं भयो कृपा रघुराई ॥ मतको द्वेष धारि उरमाहीं। दीन्हों बिष पिलाइ तिनकाहीं २०७ भयो नकछु उरलज्जा पाई। चरणन परि अपराध छमाई ॥ है कछु बात द्वेष पर नाहीं। भंगत्याज्य सबकालन माहीं २०८ ॥

रैदास की कथा॥

चौ०। भगवतभक्त परम रैदासा। जासु बचन जगदीप प्रकासा ॥ जासु काव्यहै सूर्य समाना। अन्धकार नाशक उर नाना २०९ तजोअसार सारगहिलिन्हा। इहितन गमन परम पद कीन्हा ॥ बड़े बड़े बर्णाश्रमजेई। तिनपद शीशनवाये। तेई २१० ब्रह्मचारि प्रथमोद्भव जोई। रामानन्द शिष्य रहसो-ई॥ भिक्षा मांगिनित्य सोलावैं। गुरुआगे धरिशीशनवावैं २११ बरषा भई एकदिन भारी। ब्रह्मचारि मनमाहँ बिचारी ॥ गये एकबनियां घरकाहीं। नितप्रति कहतरहो इनपाहीं २१२ तासों लै समाग्री आये। भोजन रामानन्द बनाये ॥ जबभगवत कहँ अर्पण कीन्हा। भगवत रूप दरश नहिं दीन्हा २१३ पूँछो अन्न कहां सों लाये। तिन बनियांको भवन बताये ॥ रामानँद देखो करिध्याना। अन्नचमार भवन को जाना २१४ ब्रह्मचारि कहँ दीन्हों शापा। होउ चमार लहौ कुलतापा ॥ जन्म चमार भवन तिनलीन्हों। गुरुदीक्षा बिन दूध न पीन्हों २१५ तबआ-काशगिरा सुखदाई। रामानँद सों कहो बुझाई ॥ दण्ड ब्रह्म-चारिहि अति दीन्हों। जन्म चमार भवन तिनलीन्हों २१६ तिनपर दयाकरिय अबजाई। सुनि रामानँद गये सिधाई ॥ कीन्हों मंत्र श्रवण परकासा। धारेत भये नाम रैदासा २१७ आज्ञा दूध पियनकी दयऊ। जब रैदास सयाने भयऊ ॥ सेवा

साधुकरत सुख पाई । जो कुछ मिलत देतसो लाई २१८
देखिपिता क्रोधातुर भारी।तिनहिं भवन सौंदियो निकारी ॥ पी-
छे भवन रहेसो जाई। नारी सहित महासुखपाई २१६ छप्पर
एकलीन्ह तहँ डारी । तहँ भगवत मूरति बैठारी ॥ सेवाकरन
लागसुखपाई । आपुरहत बाहर तिहिजाई २२० तिन पितु
भवनरहो धनभारा । परनहिं दीन्हा रंचगवांरा ॥ जूतींबेंचिजी-
विकालावैं । साधुदेखि बिनगथ पहिनावैं २२१ यद्यपि दुखरं-
कताधिकाई । तदपि रहत भगवत मनलाई ॥ ध्यानानन्द मग्न
सुखभारी । भगवत यहरंकतानिहारी २२२ दूरिकरन बपुसाधु
बनाई । गेरैदास भवन सुखपाई॥ लखिरैदास कीन्ह अतिसेवा।
भोजन दिये जानिहरि देवा २२३ साधू जबहिं चलन वहला-
गा। पारसास्मादिय युतानुरागा ॥ गुणबर्णन करि तिनहिं सु-
नायो। राखनकी पुनि यत्न बतायो २२४ कहरैदास चाह कछु
नाहीं।रामनाम चाहत मनमाहीं॥रामनाम धन सम्पतिजानौं।
अपर सकल मिथ्या करिमानौं २२५ तबसाधू निजमन अनु-
माना। इन पारस प्रभाव नहिं जाना ॥ लोह छुवाइक सोन
बनायो। लेनहेत पुनिपुनि समुझायो २२६ कहरैदास जोपि
हठकीजै। तौ वा छप्परमें धरिदीजै ॥ सो सुनिकै साधू धरिदी-
न्हा। मासतेरहें आगम कीन्हा २२७ ताहीबिधि देखौ रैदासा।
कहँ वह पारस बचन प्रकासा ॥ कह रैदास धरोतुम जहँवां।
पारस धरो होइगो तहँवां २२८ भय आवत मम हाथ लगाये।
तासों मैं नहिं ठौरछुटाये॥ सुनि भगवत सोलेकरगयऊ। एक
दिवस अस अचरज भयऊ २२९ पूजाकेरि पिटारी देखा । मु-
हरै पांचधरी तहँ लेखा ॥ होनलाग भय भगवत पाहीं। लखए-
काहस्वप्नके माहीं २३० भगवत आइकही यह बाता । यद्यपि
हैतव लोभन गाता ॥ परअब देइँकछू हमजोई । लीजिय हर्ष
सहित तुम सोई २३१ आज्ञा शिरधरिमानत भयऊ। धर्मशाल
इक थिरचित कयऊ। भगवत भक्तन हेत सुहावा॥ पुनि भग-

वत मन्दिर बनवावा २३२ भांति भांति के साज सजाये । शुभ चन्दोये तहँ लगवाये ॥ झालर शुभ मुक्तन की सोहै । तोरण पुरट रचित मनमो है २३३ रत्नदीप सुन्दर उजियारी । दीपवृक्ष सोहत छबिभारी ॥ भगवत साज बिबिध बिधि कीन्हा । छबि अनूप मानस धरिलीन्हा २३४ निजहित महल एकबनवायो । तहां बैठि हरि ध्यानलगायो ॥ करत विप्र भगवत बपु पूजा । है रैदास काज नहिं दूजा २३५ बहुत विप्र मन गुनि अरिभावा । भूपति सो इमिजाइ सुनावा ॥ यह रैदास चमार नृपाला । पूजत भगवत मूर्त्तिकृपाला २३६ कोई शास्त्रमाहँ नहिं लेखा ॥ अस आश्चर्य कबहुँ नहिंदेखा ॥ याको दण्ड दीजिये राजा । नाधिकार श्रुति आवत लाजा २३७ सुनि राजा रैदास बुलायो । तेज देखि कछु बचन न आयो ॥ रानी नृपझाली जिहिनामा । भई शिष्य सुनि तेज ललामा २३८ रहत विप्र जे रानीपासा । देखत या बिधि बचन प्रकासा ॥ भई भ्रष्टधीरानी तेरी । जोतूहै चमारकी चेरी २३९ याबिधि क्रोधित बचन सुनाई । भूप समीप कहो पुनि जाई ॥ तबरानी रैदास बुलाये । ब्राह्मण बहुरि तहां सब आये २४० जाति बड़ाई बिप्रनराखा । तब रैदास बचन इमिभाखा ॥ भगवत काहँ भक्ति है प्यारी । है कुलजाति दृष्टि नहिं न्यारी २४१ कहत कहत ठहरी यह बाता । सोई है अति उत्तम गाता ॥ भगवत मूर्त्ति जासु ढिगआवै । जो सिंहासन शोभापावै २४२ पढ़न वेद सुनि ब्राह्मण लागे । दीर्घ काल लगि अति अनुरागे ॥ मंत्रजाप कीन्हों मनदेई । भगवत मूर्त्ति न आयेतेई २४३ जब रैदास बात चलिआई । तब ये बोले विनय सुनाई ॥ पावन पतित नाम सच करिये । और कछूमानस जनिधरिये २४४ पुनि दो एक भजन तिन गाये । सुनि भगवत मूरति चलि आये ॥ सिंहासन सों उठि तत्काला । गे रैदास गोद जन पाला २४५ सब के होत भयो बिश्वासा । भे आधीन सकल रैदासा ॥ रानी झाली आँनँद पाई । राज-

थानि चित्तौरम जाई २४६ यज्ञ करन की इच्छा कीन्हा। पत्र भेजि रैदासहि दीन्हा॥ संयुत विनय पत्र सो देखी। जात भये रैदास बिशेखी २४७ रानी देखि महा सुख पायो। कीन्ह दान बहु द्रव्य लुटायो॥ यह भल जिय ब्राह्मणन बिचारा। रानी कोहै गुरू चमारा २४८ सूख अन्न लाये सब जाई। कीन्ह रसोई आनँद पाई। भोजन हेत बैठि जिवनारा॥ द्वैके मधि लखि परो चमारा२४६ निश्चय भो सब के मन माहीं। चेला बहुत भये तिन पाहीं॥ दूरिकरन विप्रन सन्देहा। कियरैदास चरित शुभ एहा २५० खाल चीरिउपवीत दिखावा। पूर्व जन्मकी कथा सुनावा॥ करिइमिमोह दूर सबकेरा। लीन्हों भगवत लोक बसेरा २५१॥

गोपालभट्टकी कथा॥

चौ०। भे गोपाल भट्ट हरिभक्ता। भगवद्जनकीन्ह अहनक्ता॥ भक्ति प्रताप जासुतन छायो। भक्त सभानित शोभा पायो २५२ बागड़ देश भक्तकरि दीन्हा। दासभाव मानस निज चीन्हा॥ भगवत बिमुख जाहि लखिपावा। तत्क्षण नवधा भक्ति लगावा २५३॥

दिवाकरकी कथा॥

चौ०। भये दिवाकर आनँद मूला। करमचन्द घरदारक शूला॥ तिमिरहरण जगजनसम पूषण। भगवत भक्त सभाके भूषण २५४ फलित बृक्ष जाविधि लचिआवै। तासु फलनजग जन सुखपावै॥ कृपापात्र ताविधि ये भयऊ। कोटिन विमुख शरण करिदयऊ २५५॥

खेमगोसाईंकी कथा॥

चौ०। खेम गुसाईं आनँद छाये। राम दासके शिष्य कहाये॥ दास अनन्यभये रघुनाथा। धनुशर चिह्न धरे निजहाथा २५६ उभय लोकमहँ काहुन जानत। केवल रामशरण उर आनत॥ उभयलोक सुखको नहिं चाहा। केवल रामनाम अवगाहा२५७

कल्याणसिंहकी कथा ॥

चौ० । ये कल्याणसिंह हरि चेरा। शहर नोनिरेघर जिन केरा ॥ दानि शिरोमणि भगवत दासा। भगवत भक्ति हिये परकासा २५८ दो० । नहिं अदेय हरिभक्त हित प्राणहुदेय सहेत। रामनाम रसनारटत हियहरिध्यान सचेत २५९ ॥

राजाखेमालकी कथा ॥

चौ० । राजपूत खेमाल कहाये। परम भक्त राठौर सुहाये ॥ अचल भक्ति कीन्ही कुलमाहीं। रामभक्ति तजिजानत नाहीं २६० संतन देखि सुखी अति होवै। जिमि चकोर चन्दामुख जोवै ॥ बारिधि बढ़ै यथा बिधुदेखी। तिमि आनँदलखि भक्त विशेखी २६१ ॥

केशव की कथा ॥

चौ०। केशव जिन लटेर उपनामा। है लटेर दुर्बल कर नामा ॥ पर ये भक्ति भाव में मोटे। बिषय भोग सों दिन दिन छोटे २६२ मानस भगवत चरित उदारा। जिह्वा सों हरि नाम पुकारा ॥ बूड़त भगवत प्रेम सदाई। हरिपद सूरति टरन कदाई २६३ ॥

सोतीजी की कथा ॥

चौ० । सोतीजी हरिभक्त सुहाये। भक्त सभा में श्लाघ्य महाये ॥ बन्दनीय भक्तन के आगे। श्री अवधेश चरित अनुरागे २६४ रहत मगन भगवत के ध्याना। दास भाव भगवत में आना ॥ नरहर जीके शिष्य सुहाये। निजकुल प्रगट भक्ति रस छाये २६५ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुगदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येअष्टदशदास्यनिष्ठायांषोड़शंभक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौविंशस्तरङ्गः २० ॥

दो०। राम कमल पद रेख धनु करि दण्डवत सुखेन। हरि
अवतार प्रणाम करि धारो करि सुखदेन १ बिंशैकोन निष्ठायह
भक्त मीन सुखपाथ। वात्सल्य महिमा सुखद नवभक्तनकी
गाथ २ भजन। हे रघुनाथ शरणहौं तेरी। गज कहँ ग्राहगहो
जल भीतर आकुल प्रभु कहँ टेरी॥ आरत शब्द सुनत हरिधाये
कीन्हों नेक न देरी। गहिकर चक्र ग्राह शिर काटो कृपा दृष्टि
गज हेरी॥ जियालाल यह बिनय करत है तब कर प्रभु ह्री
मेरी ३ दो०। बात्सल्य महिमा सुखद यह भगवत आकर्षि।
प्राप्त करत जन मन बिषे प्रेमानँद को बर्षि ४ या निष्ठा अवलम्ब
सों प्राप्त अवशि हरि होत। कारण निश्चय प्रेम है सो यह करत
उदोत ५ बाल्यावस्था पुत्रकी देखि होत बश तात। बोल तोतरे
प्रेममय लाखि लीलायुत गात ६ बालक लीला देखि कै बशी
बटोही होत। क्यों न होइ यह ध्यान करिजामें अमित उदोत ७
कोमलाङ्ग तोतर बयन सुन्दर श्याम स्वरूप। शीश मुकुट
लघु शोभिजै रतिपति शोभ अनूप ८ जरतारी की झींगुली
गोटे पट्ठेदार। लघुकुण्डल रोचन तिलक भाल मध्य छबिकार ९
छन्दमनहरण। नाक में बुलाक सोहै कठुला गले मँझार ब्याघ्र
नख यंत्रहू पदिक छबि छाई है। पहुँची चरण अरबिन्द सोह
घूंघुरूहु चंचल चपल यशुमति सुखदाई है॥ कबहुँ यशोदा
गोद नन्द गोद जातकहूँ किलकि खिलौना देखि लेन चाह
लाई है। कबहुँ पखेरू देखि गहन चहत मन मातुहू बुलावै पच्छी
बोलत कन्हाई है १० कहन चहत तात मात कभी बात कछू तो-
तरे बचन कहि आनँद बढ़ावहीं। चलत ठुमुकि गहि मातु की
अँगुरियन मातहू चलावैं धीरे चालुको दृढ़ावहीं॥ खेलत अँ-
गन सह सखन नचत कहुँ करै लँगराई ताहि तुरित कढ़ावहीं।
जियालाल मोद सों सयाने सखा खेलैं साथ आपुबनैं अश्व कृष्ण
ऊपर चढ़ावहीं ११ दो०। यंह छबि मानस ध्यान करि भगवत
भजै संनेम। उभय लोक सुख त्यागि कै रहै मगन हरि प्रेम १२

यानिष्ठामें भक्तजे भये कहौं तिनगाथ। तिन चरणन की बन्दि रज पुनि पगनावों माथ १३ ॥

कौशल्याजी की कथा ॥

चौ०। प्रथमहि कौशल्या की गाथा। कहौं नवाइ रामपद माथा ॥ कहौं तासु किमि भाग्य बड़ाई। भगवत भये पुत्रजिन आई १४ एक समय कौशल्या रानी। पालन सुत सुलाइ सुख दानी ॥ कुल सुर के पूजन हितजाई। नानाबिधि पक्वान्न बनाई १५ ताही क्षण अर्पण मनलाई। नेत्र मूँदि तहँ ध्यान लगाई॥ नेत्रखोलि देखो पुनिआगे। भोजनकरत रामसुखपागे १६ संभ्रमचलि पालन ढिगआई। सोवत लखो रामसुखदाई ॥ बहुरि आइ देखो तहँ सोई। याबिधि लखो रामबपुदोई १७ कौशल्या मन करत बिचारा ॥ तब भगवत माया बिस्तारा ॥ रोम रोम ब्रह्माण्ड लखाये। सकल चराचर तहँ दरशाये १८ नानाभाँति लखे बहुदेवा। बहु बिधि प्रभुकी लावहिंसेवा ॥ ब्रह्मादिक जोरे करठाढ़े। अस्तुति करहिं प्रेमरसबाढ़े १९ माया सभय जोरि कर ठाढ़ी। जो जगजन्म नाश हितगाढ़ी॥ कौशल्या लखि बिभव अपारा। आरत चरण गहे तिहिबारा २० हँसि भगवत मातहि समुझाया। अबन तुमहिं ब्यापिहि मम माया ॥ यासों प्रगट भई यह बाता। हमहिं त्यागि सुर कौन लखाता २१ मेरेभक्तय-जनममठानै। मोहिं त्यागि सुर अपरन जानै॥ पतिब्रता जिमि पति पुंजानै। अपर सकल नारीवत्मानै २२ यहिविधिहैं चरित्र तिन नाना। जियालाल संक्षेप बखाना॥ भगवत मातु प्रबंधअ-पारा। कोकविवरणि लहै जोपारा २३ ॥

नन्दयशोदाजीकी कथा ॥

चौ०। बाबानन्द यशोदारानी। भाग्यसकैकबिकौन बखा-नी ॥ पुत्रहेत प्रथमहि तपकीन्हा। हरि शिशु चरित लखन चित दीन्हा २४ भये नन्द बसुके अवतारा। धरानारि यशुमति तनुधा-

रा ॥ भगवत पूर्णकरन तिनआशा । बालचरित ब्रजकीन्ह प्रकाशा २५ लखि नँदयशुमति बाल कन्हाई । बिबिधि भाँति के लाडलड़ाई ॥ जीवन प्राणजान हरिकाहीं । आपुहि जानत धन्य सदाहीं २६ बालचरित्र करत भगवाना । मातु पिता सुखलहैंनिदाना ॥ पुनि बहुचरित करत वहिभावै । जाबिधि मनसबको लगिजावै २७ नन्द यशोदा सो नहिं मानै । भोले कृष्णसदा यह जानै ॥ गोपिन घर माखन जबखावैं । ग्वालन दै बानरनलुटावैं २८ ऊंचे देखि उलूखल धारैं । तापर चढ़ि दधिपात्र उतारैं ॥ ताहू सों ऊंचेलखिपरई । मूल छिद्र लकुटीसों करई २९ कोनेमाहँ धरी दधिजानै । मणिगणके प्रकाश लखिआनै ॥ जाके भवन कछू नहिं पावैं । सोवत बालक मारिजगावैं ३० सुन्दर मन्दिर परैलखाई । बिष्ठामूत्रकैर तहँजाई ॥ चोरीदेखि इबिधि व्रजनारी । जाइ यशोमति पासपुकारी ३१ हरिदरशनकी मनअभिलषा । सकल हाल यशुमतिसों भाषा । यशुमति सुनत नेकनहिं माना । गोपिन सों याभाँति बखाना ३२ तुमतौहौ मदकी मतवारी । यौबन जोरनसकौ सँभारी ॥ मेरो कान्हबालहै अबहीं । घरको माखनखात न कबहीं ३३ घरघरसों बनिकै तुमआई । यह गतिजानै काहकन्हाई ॥ गोपिनकहो सत्यकहबाता । सांचहुहमहिं फिरत अँठिलाता ३४ यह कहि निज निज भवनसिधाई । यशुमति कृष्ण लियोउरलाई ॥ एक समय बन नन्दकुमारा । प्यारीसहनिशिकरत बिहारा ३५ निशाजानि घर आतुरआये । सोइरहे लखिकाहु न पाये ॥ पीताम्बर रह प्यारी पाहीं । नीलाम्बर लैगेघरकाहीं ३६ प्रातहि लखो यशोदा माता । मनमें जानिगई यह बाता ॥ हैबलभद्र केर पटएहा । नखक्षत पुनिदेखे तिनदेहा ३७ लगे प्लवग नख कानन माहीं । यशुमति रोइ कहै हरिपाहीं ॥ ऐसे बनहिं लालमति जैये । शाखामृगसों जहँ दुखपैये ३८ बिप्रन बोलि दान बहुदीन्हे । नौछावरि हरि ऊपरकीन्हे ॥ यदिबहुदासी दास निकेता । स्वकर जमावदही हरिहेता ३९ ठौर ठौर माखनधरि

राखे । कबहुँ स्याम देखि यह चाखै ॥ पण्डित साधु कोउ चलिआवै । तासों मंत्र यंत्रबनवावै ४० इत उत घूमत लला हमारे । घरि कूघरी अवारसवारे ॥ दृष्टिमुष्टि लागै नहिंताके । इमि नितनई प्रीति यशुदाके ४१ याबिधि यशुमति चरित अपारा । को कबि बरणिलहै जोपारा ॥ निष्ठा बात्सल्य महँ जाना । जियालाल संक्षेप बखाना ४२ ॥

बिट्ठलनाथकीकथा ॥

चौ० । बिट्ठलनाथ गुसाईं जोई । सुत बल्लभाचार्य्यके सोई ॥ बात्सल्य निष्ठा सुदृढ़री । पूरण प्रीतिभई जिनकेरी ४३ उठि प्रातहि भगवतहि जगावैं । मुख धुलाइ अस्नानकरावैं ॥ आभूषण पोशाक समेता । पुनि शृङ्गार कराव सहेता ४४ षटरस व्यंजन भोगलगावैं । सुभग सेज भगवत पौढ़ावैं ॥ कीर्त्तनकरैं बिबिध हरिकेरे । सदाचित्तरह भगवतनेरे ४५ नन्द समय गोकुलमें जैसो । इनसमाज करिदीन्हेंतैसो ॥ निजसेवकन हिये प्रगटायो । कलियुगमें द्वापर जनुआयो ४६ साक्षात दर्शनसम इनहीं । यद्यपि होतरहैंप्रतिदिनहीं ॥ भइतथापि इच्छाइकबारा । बालचरित देखिय सुखसारा ४७ दो० । पूर्णमनोरथ करनहित कहतभये भगवान । रूपावेश लखावहीं बालचरित सुखदान ४८ चौ० । बड़ोपुत्र गिरिधर जब भयऊ । प्रविशिकला बपु भगवत गयऊ ॥ बालचरित्र तिनहिं दरशाये । बिट्ठलनाथ महानँद पाये ४९ हाय न पाँच उपर जब भयऊ । भगवत कला अलग तबगयऊ ॥ याबिधि सातपुत्रतनमाहीं । बालचरितहितगेहरि ताहीं ५० एकसमय मर्कट इक आयो । भगवत देखि महा भय पायो ॥ धाइ गोद बिट्ठल महँ गयऊ । बिट्ठल देखि कहत इमि भयऊ ५१ दो० । कोटिन मर्कट काल सम चढ़े लंक सँगधाइ । तब न डरे अब भय करत लघु बनचर को पाइ ५२ चौ० । कारण कहिये कौन बुझाई । सुनि भगवत बोले सुख पाई ॥ या

बिधि जो चित वृत्ति तुम्हारी। मम ईश्वरता ओर निहारी ५३
बाल उपासन तौ किमि कीजै। मम ईश्वरताही चित दीजै॥
बाल चरित्र हिये यदि धरिये। तौ चिंतवन प्रभुत्व न करिये ५४
मम चरित्र अरु रूप सुहाये। कीन्ह कृपा तिहि हिये लखाये॥
भक्त चाह अनुकूल सदाई। नाहिंत हम कतहूँ न कदाइ ५५
रहत सदा इन बातन न्यारे। माया गुणन सदाहैं पारे॥ निर्गु-
ण निराकार अज जोई। अव्यय अलख अगोचर सोई ५६ बि-
ट्ठल नाथ कृपा गुनि भारी। अति आनँद पायो तिहि बारी॥
सातौं पुत्रन नाम सुहाये। बलभाचार्य्य संप्रदा गाये ५७ सवा
बेश अवतार सुहाये। गादी सात माहँ छबि छाये॥ आजहुँ
गोकुल में छबि पावैं। जग बारिधि में पोत सुहावैं ५८ बिट्ठल-
नाथ बल्लभाचारी। सात पुत्र बिट्ठल सुखकारी॥ भगवत
मूर्ति सात पधराई। एक मूर्ति तिन में सुखदाई ५९ जिन
श्री नाथ नाम छबि छायो। राना आइ बिनय बहु गायो॥
आलमगीर मलिक तिहिकाला। राना देश गये सुखपाला ६०
उदय पूरके उत्तर ओरा। अजहुँ बिराजत नन्दकिशोरा॥ गो-
कुल चन्द्रमाहु पुनि नामा। मूरति दोसरि सुखद ललामा ६१
आलमगीर शाह रह जबहीं। जयपुर भूप गयो लै तबहीं॥
जयपुर माहँ अजहुँ सो राजत। दर्शन करत अखिल अघ
भाजत ६२॥

कर्म्माबाई की कथा॥

चौ०। कर्म्माबाई हरिरंग छाई। परमभक्त भगवतकी गाई॥
बालरूप भगवतकर ध्याना। बालचरित्र सदाकर गाना ६३
जिमि प्रातहिं बालक उठि कोई। मासों भोजन मांगत सोई॥
प्रथमहिं बालक जागन तेरे। चिंताहोत हियेमाकेरे ६४ तिमि
कर्म्माबाई उठि प्राता। करैं खीचरी होत प्रभाता॥ बिनाहाथ
मुख धोये पावैं। भगवत बाल भुखाइ न जावैं ६५ देखि प्रीति

भगवत नित आवैं। जगन्नाथजी आनँद पावैं॥ बैठिगोदनित भोजन करईं। कर्माबाइ हिये मुदभरईं ६६ साधू एक एकदिन आयो। सो तिनसों आचार बतायो॥ कहाकरत तूबिना अन्हाये। भगवतको इमि भोगलगाये ६७ लगींकरन सुनिके विधि सोई। भोजन माहँ देर अब होई॥ कम्मीबाइ गोद इकबारा। खिचरी खात रहे सुखसारा ६८ की पुरुषोत्तमपुरी मँझारा। राज भोगहू भयो तयारा॥ बिन मुख हाथधोइ क्षणगयऊ। पण्डा तबहिं बिलोकत भयऊ ६९ मुख में लगी खीचड़ी देखा। पण्डा चक्रित भयेबिशेखा॥ पूछतभये बिनयकरि जबहीं। भगवत कहत भये इमि तबहीं ७० कम्मीबाई सुकृतगाता। करत खीचरी रही प्रभाता॥ प्रेम सहित वेभोग लगावैं। तिनके भवन नित्य हमजावैं ७१ एकदिवस साधू इकआई। तिनहिं गयो आचार बताई॥ तबते नित्य देरह्वैजाई। वासाधूसों कहौ बुझाई ७२ करि उपदेश प्रथमकोदेई। सुनि पण्डा ढूंढ़तभेतेई॥ सुनि साधू तिनके घरआयो। भगवत शिक्षाको बतलायो ७३ सुनि कम्मीबाई सुखपावा। जामन रहै प्रथम पछितावा॥ कीमम बालकहै अतिबारा। भूखसहै सो किमि सुकुमारा ७४ करत सदा लघुभोजनजोई। भूखो रहत देरलगसोई॥ शिक्षापाइ मोदसोपागी। खिचड़ी प्रातबनावनलागी ७५ अजहूँ सबभोगनके आगे। खिचड़ी भोग प्रातको लागै॥ जगन्नाथजी आनँद लावैं। जियालाल प्रेमातुरपावैं ७६॥

गोकुलनाथकी कथा॥

चौ०। हरिजन गोकुलनाथ सुहाये। बिट्ठलनाथपुत्रसुखछाये॥ पौत्र बल्लभाचारय केरे। परमभक्त भगवत के चेरे ७७ सुन्दर धीर सहिष्णु उदारा। गिरिधर राय भक्तिं दृढ़धारा॥ भक्ति प्रताप बिलोकि महाई। बड़बड़ भूप आवशरणाई ७८ कान्हा श्वपच रहो इकजोई। झारन भवन जात नितसोई॥ भगवत

रूप अनूपम देख। रहैं प्रेमरस मग्न बिशेखै ७६ श्रीगुसाइँ चित इकदिन आई। दृष्टि सबन परिबो न भलाई॥ भित्यावरण एकबनवाई। परत न भगवत दूरलखाई ८० तबकान्हा दरशन नहिं पायो। यहभगवतके मनहिं न भायो॥ कान्हापाहँ स्वप्न में गयऊ। याबिधि बचन कहन पुनि लयऊ ८१ करियो बिनय जाइ तुम एहा। गोकुलनाथ पाहँ नतदेहा॥ नई भित्ति देवैं गिरवाई। दूरलखन मम बाधादाई ८२ तब कान्हा मनमाहँ बिचारा। मैं उत जैहौं कौनप्रकारा॥ द्वारपाल यह देखि ढिठाई। पीटहिंगे मोकाहँ बनाई ८३ छन्द रामगीतिका। लालजी महराज मोसन कहतहैं बिनकाज। समुझि यह चुपरहत भो सो मनहिं आई लाज॥ तीनिदिन भगवान याबिधि करी आज्ञा जाइ। शीशधरिकै द्वारपालन कहो कान्हा आइ ८४ चौ०। गोसाईं सो कहो न कोई। कोई मनुज हालकंह सोई॥ सोई सुनिकान्हाहि बुलाई। हरिजन गोकुलनाथ गुसांई ८५ पूंछत भे तासों पुनि हाला। काआज्ञा दिय गिरिधर लाला॥ सुनि कान्हा सबहाल बतायो। गोकुलनाथ हिये तिहि लायो ८६ इंगित प्रथमहि परी लखाई। भये मग्न प्रेमाम्बुधि पाई॥ बेसुधि होत भये तिहि बारा। जनु मदमत्त कोउ मतवारा ८७॥

गुंजामाली की कथा॥

चौ०। हरिजन गुंजामाली एका। बातसल्यनिष्ठा दृढ़टेका॥ गुंजमाल प्रतिदिवस बनावै। श्रीब्रज भूषणको पहिनावै ८८ मृत्यु बिवशभो सुत तिनकेरा। बहूबुलाइ कहो तिहिबेरा॥ धन सम्पति घरबार तुम्हारा। मालिक श्रीगोपाल उदारा ८९ जो मनभावै सोलैलीजै। भगवत सेवामें मनदीजै॥ सोकह मोहिं चाहकछु नाहीं। भगवतसेवा रतिमनमाहीं ९० गुंजामाली आनँदपाई। भगवतसेवा तिहिंसौंपाई॥ धन सम्पतिदै दाराकाहीं। आवतभो वृन्दाबन माहीं ९१ श्रीब्रजवल्लभपद अनुरागे। सु-

मिरण भजन करन तहँलागे ॥ सेवाकरन बहू उतलागी। बिफ लक्षणन होवैमुदपागी ९२ बालक बहुत तहां नितआवैं। नाना बिधिके खेलमचावैं॥ दिनइक बाल ढिठाई कीन्हा। धूलिडारि भगवतपर दीन्हा ९३ देखि बहू अतिशय रिस कीन्हा। बालक सकल खेदि तहँ दीन्हा॥ आगे धरा भोग लै जबहीं। भोजन कियो न भगवत तबहीं ९४ अनमन होइ कहन इमि लीन्हों। सखाहमार खेदितैंदीन्हों॥ तेरो भोजनहू नहिं करिहैं। सखन बिनाकिमि धीरज धरिहैं ९५ बहुत मनायो कियोदुलारा। भगवत कियो न अङ्गीकारा॥ सरुट बहू याभांति पुकारा। बिगरैगो कालल्लाहमारा ९६ तुमरीही पोशाक बिगारी। कही मानलो आजहमारी॥ कालिदेउँगी धूलि भुकाई। जैतीकहिहौ श्रीब्रजराई ९७ एकहु मनमें बात न आई। बहू बोलि बालन तबलाई॥ भोजन करत भये भगवाना। जियालालप्रभु कृपानिधाना ९८ ॥

गिरिधरकी कथा॥

चौ०। गिरिधर परम भक्त भगवाना। बिट्ठलनाथ पुत्र सुखदाना॥ पौत्रबल्लभाचारय जोई। सुरतरु अधिक होतभे सोई ९९ केवल अर्थ कल्पतरु देवै। कोउकामना करिजब सेवै॥ गिरिधर महाराज सुखमानी। अर्थादिक चारिहु के दानी १०० बिनाचाहना देवैंहीके। वेदसारजानो अति नीके॥ जहँबैठैं हरिचरित प्रकाशैं। दरशन करत अखिल अघनाशैं १०१॥

तिपुरदासकी कथा॥

चौ०। तिपुरदास कायस्थ बखाने। बात्सल्यनिष्ठा रससाने॥ रहै शेरगढ़ बासस्थाना। भगवत भक्तात्यन्त सुजाना १०२ शीतकाल प्रति सम्बत माहीं। जिनके यो विधि प्रीति सदाहीं॥ महाराज श्रीनाथ कि हेता। जरदोंजी पोशाक सुदेता १०३ अथवा और भांति बनवावैं। आनँद सहित तहां पठवावैं॥

बश संयोग नृपति धनजोई । लीन्हों करि निरोध सबसोई १०४
पासरहोइनकेकछुनाहीं । लागेशोचकरन मनमाहीं ॥ कछूउपाय
न चलतहमारा । वह जड़ातह्वैहै सुकुमारा १०५ रोवनलगेमहा
दुख पागे । बहुरि जाइघर ढूंढ़नलागे ॥ एकपात्रमसिको लखि
पाया। मुद्रा एकबेंचि सो लाये१०६मोटा थान एक पुनि लीन्हा ।
ताहि कुसुम सों रंजित कीन्हा ॥ भेजन को मन माहँ बिचारी ।
पुनि पुनि देखत ताहि निहारी १०७परम मनोहर अति सुकुमारा।
ताहित भेजौं कौन प्रकारा ॥ हाय न यह है भेजनयोगू । पुनि
पुनि करत भये उर शोगू १०८ कोई भक्त जान ब्रज लागा ।
ताको दीन्हों युत अनुरागा ॥ ह्वै आधीन बिनय बहु कीन्हा ।
तासों बहुरि कहन इमि लीन्हा १०९ गोसाईं जानैं नहिंबाता ।
दासी दासिन योगन ताता ॥ दीजै कहुँ भण्डार मडारी । सो
लै दीन्ह जाइ भण्डारी ११० तिरस्कार युत सो लै लीन्हा । बस्त्र-
न तरे डारितिहि दीन्हा ॥ जब ओढ़ायो श्री गोसांई । श्रीनाथ-
हिलै सुभगरजाई १११ जो तोशखाने सों आई । श्रीनाथ-
हि अति शीत सताई ॥ श्री गोसाईं कांपत देखा । लै लिहाफ़
ओढ़ाव बिशेखा ११२ जाड़ा नेक गयो नहिं जबहीं । अपर
बसन ओढ़ाये तबहीं ॥ बहु रूमाल रजाई नाना । कांपत रहे
तबहुँ भगवाना ११३ आगि जलाइ अँगेठी धारा । कीन्हबहुरि
तिन बन्द किवारा ॥ जाड़ा नेक दूरि नहिं भयऊ । तबहिं बोलि
भण्डारिहि लयऊ ११४ कह काकी है प्रीति महाई । भेजो को
को भक्त रजाई ॥ तब भण्डारी लै सब आयो । जो नृप साहूकार
पठायो ११५ तब गोसाइँ उढ़ावत भयऊ । किंचिच्छीत दूरि
नहिं भयऊ ॥ भण्डारि हि सुमिरण ह्वैआयो । गोसाईंसों बरणि
सुनायो ११६ तिपुर दास दारिद्री भयऊ । भेजन मोट थान इक
लयऊ ॥ बांधन हरि पोशाकन हेता । धरो अहै भण्डार निके-
ता ११७ सुनि गोसाईं तुरित मँगायो । चुनि सो भगवत काहँ
उढ़ायों ॥ तत्त्वण शीत दूरिसो भयऊ । भक्त मान राखन प्रभु

लयऊ ११८ जियालाल ऐसे भयवाना। तिनहिं भूलि सुखचह अज्ञाना ॥ प्रेम सहित जल पत्र चढ़ाये। मानत मणि सुवरणके भाये ११९ तण्डुल विप्र सप्रेम चबाये। शवरीके जूठ फल खाये ॥ ग्वालन जूठि छाक जिन खावा। माखन ब्रजघरनीन चुरावा १२० ॥

कृष्णदासकी कथा ॥

चौ०। कृष्णदास हरिभक्त सुहाये। वात्सल्य निष्ठा सुख छाये॥शिष्यवल्लभाचारय जोई। भगवत काहँ परम प्रिय सोई १२१ भगवत कीन्हीं कृपा महाई।नित्यानन्दम लीन्ह मिलाई॥ काव्य ललित जिनकी सुखदाई। पण्डित भक्तन के मनभाई १२२ एक समय दिल्ली में आये। हरिशृङ्गार खरीदन लाये ॥ लखी जलेबी बीच बजारा।मनमें याबिधि कीन्ह बिचारा १२३ भेजी जाहँ नाथ जीहेता। खाइँकूदि भल मांझनिकेता॥ देहिंबुलाइ मर्कटन काहीं। होहिं प्रसन्न बहुत मनमाहीं १२४ प्रेमातुर सब सखन बुलावैं। आपुखाइँ पुनिसबन खवावैं॥ करिचिंतवन ध्यान इमि आयो। भगवत मानसि भोगलगायो १२५ भगवत कीन्हों अङ्गीकारा। कृष्णदासगे आगे थारा ॥ कृष्णदास मन आनँद माना। थारा तजि आये दूकाना १२६ कृष्णदास बाँटो सबकाहीं। जातभये आगेचलि ताहीं॥ सखी एकको नाचत देखा। मनमें आनँदलहो बिशेखा १२७ याकोनाच नाथजी देखें। तौ कस आनँद लहैं बिशेखैं॥ निकटबुलाइ कहो तिहिबारी। नाथहमार रसिकहै भारी १२८ यह कहिकै ताको लैआये। मज्जन मानसि गंगकराये॥ पुनिताकहँ शृंगारकराई। भगवंते सन्मुखगये लवाई १२९ सखी देखि श्रीनाथस्वरूपा। प्रेममगन सोभई अनूपा ॥ कृष्णदास तबकहो बिशेखा। मम साहेबजादे को देखा १३० सो देखा याभाँति बखाना। मम मननैनन मांझ समाना ॥ यह कहि नृत्यकरनसो लागी। नानाभाँति प्रेमरसपागी १३१ मुख

बिलास अरुनैन बिलासा । कीन्हे निजबश रमानिवासा ॥ तदाकारहो मनअनुरागी। दीन्हों तुरितदेहसोत्यागी १३२ नित्य बिहारम जाइ समानी । कोसक हरिजन कृपाखानी॥ कृष्णदास जी आनँदराशी। ग्रंथ प्रेमरस रामप्रकाशी १३३ कीन्हों भगवत अंगीकारा। संतसभा महँ भयो प्रचारा॥ सूरदास मिलिबे हित आये। कृष्णदास सो बचन सुनाये १३४ ऐसोपद निजरचित सुनैये। जहँ ममपदको भावनपैये ॥ कृष्णदास पद कछुक सुनाये। सूरभाव आपन ठहराये १३५ कृष्णदास सुनिकहोबुझाई। प्रातहिदेहै तुमहिं सुनाई॥ सोवतभे चिंता चितधारी। पदबनाइ धरिदीन्ह मुरारी १३६ प्रातहि उठि तकियातर देखा। आनँद पावतभये बिशेखा॥ सूरदास कहँ दियोसुनाई। सुनिकै सूरकहो मुसुकाई १३७ यह बिरचो कौतुक तबहेरी। बात न जाइबखामकेरी॥ कहिदोनों सुधि बुद्धि बिसारी। सागर प्रेमकीन्हपैसारी १३८ कृष्णदास नित यमुनाबारी। लैआवैं भगवत हितकारी॥ हैनवकोस भूमिवह जोई। भगवत मना करतभे सोई १३९ नहिं माने भगवत समुझाये। कलश चिह्न निज शीशलखाये॥ तब लाचारभये हरिआगे। कूप तोय नित लावनलागे १४० याबिधि तिन बहुचरित सुहाये। जियालाल संक्षेपहिगाये॥ हरिजन चरित सुखद सबकाला। सुमिरत हरिआवत उरहाला १४१॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येएकोनविंशवात्सल्यनिष्ठायांनवभक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधावेकविंशस्तरङ्गः २१॥

दो०। यह महिमा सौहार्दहै निष्ठबीसवींजौन। जामें रस भक्तन कथा कहौं बरणिकै तौन १ अष्टकोण पुनिरेखको राम चरण की नौमि। पुनिं प्रणाम बहुबिधि करौं जो कल्कीहैसौमि २ छन्दरागीतिका। अन्तकलियुग देश सम्हल धरहिंगेबपु जोइ। नाम कलियुग पाप पुंज प्रहार करिहैं सोइ॥ करहिं

थापित धर्म सतयुग वर्ण निजपथहोइ । अश्वदूरग बैठिजिन कर दुष्ट बाचन कोइ ३ चौ०। हैंजे जग सम्बन्ध सुहाये । नव प्रकारके बुधजन गाये ॥ शेषी शेष एकहै सोई । अंशी अंश जानिये दोई ४ देही देह तृतीय कहावै । पतिपत्नी चतुर्थ छबि पावै ॥ पूजक पूज्य सुपंचम कहिये । षष्ठसेव्य सेवक मुद लहिये ५ सप्तम रक्षक रक्ष्य बखानो । जनक जन्य अष्टम उर आनो ॥ गुरू शिष्यहै नवम सुहावा । प्राप्तहोत ईश्वर परभावा ६ येजो नवसम्बन्ध गनाये । भगवत परे न एकौ गाये ॥ ईश्वर सों सम्बन्ध पुराना । जबसों जग यह जीवबखाना ७ ताते सब परईश बखानो । सब सबन्ध ताहि पर आनो ॥ नाते सकलतुच्छहैं तेते । सत्यनात भगवंत पर जेते ८ एसम्बन्ध एकतनगाये । जीवईश तनमान न पाये ॥ ताते नात ईश सतिमानै । अपर सकल मिथ्या करिजानै ६ दीन्हों पतिन त्यागि ब्रजनारी । मीरातजो न दोष बिचारी ॥ दीन्ह त्यागि प्रह्लाद पिताहीं । भोजग सुयश पाप लहनाहीं १० बलिगुरु त्यागि दियो क्षण माहीं । भगवत हेत लगो अघनाहीं ॥ भगवतही सों नातो मानै । दृढ़ विश्वास हिये निजठानै ११ जेते जग सम्बन्धकहावैं। तामें एकनात ठहरावैं ॥ ताके सदृश भाव उरआनै । ईशभाव को तहां न मानै १२ भगवत केर बचन सुखपांती । बिदित पुराणन में बहुभांती॥ की ममभजै जौन विधिजोई। तादृक फल पावतहै सोई १३ यह लघुबासर कथा प्रकाशी । राम प्रसाद जनक पुरबासी ॥ गुणयामात रामकहँ जोई । आवतभये अवधपुर सोई १४ अवध भूमि तोयादिक त्यागा । आवदरशहित सहानुरागा ॥ रघुनन्दन मन्दिर जब आये । भक्ति प्रताप राम दरशाये १५ तत्क्षण रत्न सिंहासन त्यागी । आगे मिले चित्त अनुरागी ॥ चाहिय रीति जनक हित जोई । रघुनन्दन सूरति किय सोई १६ है यह बात प्रगटसुदगेहा । याके कहन प्रयोजन एहा ॥ दृढ़ निश्चय होवै मनमाहीं । सिद्धप्रयोजन संशय

नाहीं १७ यानिष्ठा जे भक्त कहाये। बरणों तिनके नाम सुहाये॥ तिनमें प्रथम जनक की गाथा। कहौंनाइ रघुबरपद माथा १८॥

राजा जनक की कथा॥

चौ०। महिमा जनक महासुखदाई। को बरणै तिन भाग्य बड़ाई॥ जिनघर जगत जननि श्रुति सारा। मंगल मूललीन्ह अवतारा १९ छन्द दण्डक। बिश्वामित्र साथ रघुनाथ जबजातभये जनकसमाज धनुयाग सुनिभारीहै। देखत स्वरूप सुखधाम छबि कामहर जनक बिरति योग सुरति बिसारीहै॥ नृपन समाज मांझ परण सुमिरि निजरामहिं निरखि सुधि बुधि तजि डारी है। कोमल बदन बाल सुखमा सदन काल काल को धनुषयह कौन भांति टारी है २० छन्द षट्पद। देखि जनकमन शोच रामधनु तुरित बिभंज्यो। देश देश के भूपकरी मद हरिहरि गंज्यो॥ सीयलिये जयमाल आइ ग्रीवा पहिरायो। जनकानँद तिहिकाल मिष्ट गूंगा जिमिखायो॥ कह जियालाल तिहि काल सुख सुरनर मुनि जेतो लहो। नहिं शेष शारदा कहिसकैं जाइन पुरबासिन कहो २१ दो०। सुमन वृष्टि देवनकरी बन्दी सुयश उचार। विप्रवेद धुनिराम सिय पुंट मण्डफ पगुधार २२ ग्रंथिजोरि भावँरि फिरत सुरनर लखत सनेह। मणि खंभन प्रतिबिम्ब लखि भये विदेह विदेह २३ सियाराम जोरी निरखि बाढ़ो नेह अपार। आनंदाम्बुधि डूबियो लहोन वारा पार २४ रामबसे तहँ बहुत दिन दशरथ सहित समाज। लहि आयसु कीन्हों बिदा जनकराज महराज २५ जनकराज बैठाइयो सीता राम समेत। एकहि पालकि के बिषे पुनिपुनि लखतसहेत २६ प्रेम जलधि बूड़े बहुरि सीताराम पठाइ। जियालाल किमि कहि सकैं कविगति बुद्धि शकाइ २७॥

कथा वृषभानु व कीर्ति जीकी॥

दो०। महाराज वृषभानुकी कीर्ति कीर्ति महरानि। म-